Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 2

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 46

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

16 नवम्बर 2017 ई. 26 सफर 1439 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

बराहीन अहमदिया में एक पेशगोई है कि رَبِّ لَا تَذَرۡنِیۡ فَرۡدًا وَّ اَنۡتَ خَیۡرُ الۡوَارِثِیۡنَ

यह दुआ इस भविष्य की बात के लिए पेशगोई थी कि ख़ुदा तआला रूहानी सम्बंध रखने वालों की एक जमाअत मेरे साथ कर देगा जो मेरे हाथ पर तौबा करेंगे अत: ख़ुदा तआला का शुक्र है कि यह पेशगोई बड़ी सफाई से पूरी हुई।

मैं कसम खा कर कह सकता हूं कि हज़ारों सच्चे और वफादार मुरीद बैअत के बाद ऐसी पवित्र तब्दीली हासिल कर चुके हैं कि एक एक इंसान उन में एक एक निशान के है। पहले मैं अकेला था और मेरे साथ कोई जमाअत न थी और अब कोई विरोधी इस बात को छुपा नहीं सकता कि अब हज़ारों लोग मेरे साथ हैं।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

91. इकानवेवां निशान - बराहीन अहमदिया में जो आज से पच्चीस वर्ष पूर्व समस्त देशों में प्रकाशित हो चुकी है अर्थात् पंजाब और हिन्दुस्तान के प्रत्येक भाग में तथा अरब देशों, शाम, काबुल और बुख़ारा आदि। अत: समस्त इस्लामी देशों में पहुंचाई गई है। इसमें यह एक भविष्यवाणी है - رَبِّ لَا تَذَرۡنِیۡ فَرۡدًا وَّ اَنۡتَ خَیۡرُ الۡوَارِثِیۡنَ अर्थात् ख़ुदा की वह्यी में मेरी ओर से यह दुआ थी कि हे मेरे ख़ुदा ! मुझे अकेला मत छोड़ जैसा कि अब मैं अकेला हूं और तुझ से अच्छा कौन वारिस है अर्थात् यद्यपि मैं इस समय सन्तान भी रखता हूं, पिता भी और भाई भी किन्तु आध्यात्मिक तौर पर अभी अकेला ही हूं तथा तुझ से ऐसे लोग चाहता हूं जो आध्यात्मिक तौर पर मेरे वारिस हों। यह दुआ उस भावी बात की भविष्यवाणी थी कि ख़ुदा तआला आध्यात्मिक संबंध रखने वालों की एक जमाअत मेरे साथ कर देगा जो मेरे हाथ पर तौबा करेंगे। अत: ख़ुदा का आभार है कि वह भविष्यवाणी नितान्त स्पष्टता से पूरी हुई। पंजाब और हिन्दुस्तान से हज़ारों भाग्यशाली लोगों ने मेरे हाथ पर बैअत की है और इसी प्रकार काबुल देश से बहुत से लोग मेरी बैअत में सम्मिलित हुए हैं तथा मेरे लिए यह प्रक्रिया पर्याप्त है कि हज़ारों लोगों ने मेरे हाथ पर अपने भिन्न-भिन्न प्रकार के पापों से तौबा की है और हज़ारों लागों में बैअत करने के पश्चात् मैंने ऐसा परिवर्तन पाया है कि जब तक ख़ुदा का हाथ किसी को शुद्ध न करे ऐसा शुद्ध कदापि नहीं हो सकता और मैं क़सम खाकर कह सकता हूं कि मेरे हज़ारों सच्चे एवं वफ़ादार मुरीद बैअत करने के पश्चात् ऐसा पवित्र परिवर्तन प्राप्त कर चुके हैं कि उनमें से एक-एक सदस्य एक-एक निशान के तौर पर है। यद्यपि यह उचित है कि उनके स्वभाव में पहले ही से एक तत्त्व हिदायत और कल्याण का गुप्त था, परन्तु वह पूर्ण स्पष्टता के साथ प्रकट नहीं हुआ जब तक उन्होंने बैअत नहीं की। अत: ख़ुदा की साक्ष्य से सिद्ध है कि पहले मैं अकेला था और मेरे साथ कोई जमाअत न थी और अब कोई विरोधी इस बात को गुप्त नहीं रख सकता कि अब हज़ारों लोग मेरे साथ हैं। अत: ख़ुदा की भविष्यवाणियां इस प्रकार की होती हैं जिनके साथ ख़ुदा का समर्थन और सहयोग होता है। मुझे इस बात में कौन झुठला सकता है कि जब ये भविष्यवाणी ख़ुदा तआला ने की और बराहीन अहमदिया में दर्ज होकर प्रकाशित की गई। उस समय जैसा कि ख़ुदा ने कहा - मैं अकेला था और ख़ुदा के अतिरिक्त मेरे साथ कोई न था। मैं अपने स्वजनों की दृष्टि में तिरस्कृत था क्योंकि उनके मार्ग और थे तथा मेरा मार्ग और था तथा क़ादियान के समस्त हिन्दू भी कट्टर विरोध के बावजूद यह साक्ष्य देने के लिए विवश होंगे कि मैं वास्तव में उस युग में एक अज्ञात अवस्था में समय व्यतीत करता था और इस बात का कोई लक्षण मौजूद न था कि इतनी श्रद्धा और प्रेम और पूर्ण प्रयत्न का संबंध रखने वाले मेरे साथ सम्मिलित हो जाएंगे। अब बताइए कि क्या यह भविष्यवाणी चमत्कार नहीं है ? क्या मनुष्य इस पर समर्थ है ? यदि समर्थ है तो वर्तमान या भूतकाल में से इसका कोई उदाहरण प्रस्तुत करो -

فَاِنۡ لَّمۡ تَفۡعَلُوۡا وَ لَنۡ تَفۡعَلُوۡا فَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِیۡ وَ قُوۡدُہَا النَّاسُ وَالۡحِجَارَۃُ ۚ اُعِدَّتۡ لِلۡکٰفِرِیۡنَ

92. बानवेवां निशान - वह मुबाहला है जो अब्दुल हक़ ग़ज़नवी के साथ अमृतसर में किया गया था जिसको आज ग्यारह वर्ष हो गए हैं वह भी ख़ुदा तआला का एक निशान है। अब्दुल हक़ ने मुबाहले के लिए बहुत आग्रह किया था और मुझे उसके साथ मुबाहला करने में संकोच था क्योंकि जिस व्यक्ति का शिष्य होने की ओर वह स्वयं को सम्बद्ध करता था वह मेरे विचार में एक सदाचारी व्यक्ति था अर्थात् स्वर्गीय मौलवी अब्दुल्लाह साहिब ग़ज़नवी। यदि वह मेरे युग को पाता तो मैं विश्वास करता हूं कि वह मुझे मेरे दावे के साथ स्वीकार करता तथा अस्वीकार न करता परन्तु वह सदाचारी मनुष्य मेरी दा'वत से पूर्व ही मृत्यु पा गया तथा जो कुछ आस्था में दोष था वह हिसाब-किताब के योग्य नहीं क्योंकि किसी बात का चिन्तन-मनन द्वारा निष्कर्ष निकालने की गलती क्षमा की श्रेणी में आती है और पकड़ या हिसाब-किताब का कार्य ख़ुदा के सन्देश या निमंत्रण पहुंचने तथा समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण होने के पश्चात् आरंभ होता है किन्तु इसमें सन्देह नहीं कि वह संयमी और सत्यनिष्ठ था तथा संसार-त्याग की भावना का उस पर प्रभुत्व था तथा सदाचारी लोगों में से था। मैंने उसकी मृत्यु के पश्चात् एक बार उसे स्वप्न में देखा तथा उसे कहा कि मैंने स्वप्न में देखा है कि मेरे हाथ में एक तलवार है जिसकी मूठ मेरे हाथ में है और नोक आकाश में है और मैं उस तलवार को दाएं-बाएं चलाता हूं और प्रत्येक वार से हज़ारों विरोधी मरते हैं। इसकी ता'बीर क्या है ? तब उन्होंने कहा कि यह समझाने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण होने की तलवार है ऐसा तर्क जो पृथ्वी से आकाश तक पहुंचेगा तथा उसे कोई रोक नहीं सकेगा। यह जो देखा कि कभी दाहिनी ओर तलवार चलाई जाती है और कभी बाईं ओर। इससे अभिप्रय दोनों प्रकार के तर्क हैं जो आप को दिए जाएंगे अर्थात् एक बुद्धि और नक़्ल के तर्क दूसरे ख़ुदा तआला के ताज़ा निशानों के तर्क। अत: इन दोनों मार्गों से संसार पर समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण होगा और विरोधी लोग इन तर्कों के समक्ष अन्तत: खामोश हो जाएंगे जैसे कि मर जाएंगे। पुन: कहा कि जब मैं संसार में था तो मैं आशान्वित था कि ऐसा कोई मनुष्य पैदा होगा। ये शब्द हैं जो उनके मुख से निकले। झूठों पर ख़ुदा की ला'नत।

जब वह जीवित थे एक बार ख़ैखी के स्थान पर दूसरी बार अमृतसर में उनसे मेरी भेंट हुई। मैंने उन्हें कहा कि आप मुल्हम हैं, हमारा एक उद्देश्य है इसके लिए आप दुआ करें परन्तु मैं आपको नहीं बताऊंगा कि क्या उद्देश्य है। उन्होंने कहा - درپوشیدہ داشتن برکت است و من انشاء اللہ دعا خواہم کردو الہام امراختیاری نیست۔

पृष्ठ 11 पर शेष

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

पहले मसीह की वफात हो गई है हज़रत मसीह ही इमाम महदी हैं

मुहम्मद हमीद कौसर, कादियान

(भाग-6 अन्मित भाग)

दर्द भरा अनुरोध

हज़रत मसीह और महदी मौऊद अलैहिस्सलाम ने जिस जमाअत की स्थापना की इस का नाम जमाअत अहमदिया मुस्लिमा है। यह जमाअत पाँच अरकाने इस्लाम और छह ईमान के अरकान पर विश्वास रखती और इसी के अनुसार कार्य करती है। जमाअत अहमदिया हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अंतिम शरीयत वाला वाला नबी व रसूल विश्वास करती है और उसका मानना है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद क़यामत तक ऐसा नबी या रसूल इस धरती पर नहीं आ सकता कि नई शरीयत, नई किताब, या नया धर्म लेकर आए इस लिहाज़ से हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अंतिम शरीयत वाले नबी रसूल हैं। कुरआन मजीद व शरीयत मुहम्मिदया यह आख़री किताब और अंतिम शरीयत है। इसके बाद कोई पुरानी या नई किताब व शरीयत नाज़िल नहीं हो सकती। लेकिन कुछ मुल्लां यह विश्वास रखते हैं कि हज़रत ईसा अलैहिस्सालम जिन्हें इंजील दी गई थी आख़री ज़माने में उतरेंगे। मानो वह इंजील और इंजील वाले को आख़री नबी व रसूल मानते हैं। जमाअत अहमदिया मुस्लिमा इस विश्वास को ग़लत और झूठ विश्वास करती है।

जमाअत अहमदिया मुस्लिमा कुरआन के हर शब्द पर विश्वास और ईमान रखती है। अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद में फरमाया है कि "और जो लोग अल्लाह और रसूल (मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की इताअत करेंगे वे उन लोगों में शामिल होंगे जिन पर अल्लाह तआला ने पुरस्कार किया है, यानी नबियों और सिद्दीकीन और शहीदों और सालेहीन में ये लोग बहुत अच्छे साथी हैं। " (सूर: निसा 4/71) यानी मुसलमानों में से जो लोग अल्लाह तआला और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पूर्ण आज्ञाकारिता करेंगे अल्लाह तआला उनमें प्रत्येक को उनकी मक्बूल आज्ञाकारिता के अनुसार उम्मते मुहम्मदिया में सालेह, शहीद, सिद्दीक और नबी बना दे गा। मगर जिसे नबी बनाया जाएगा वह उम्मती नबी और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ख़ादिम बनकर इस्लाम तो पुन: जिंदा करेगा और सारे संसार में आप की तब्लीग़ करेगा।

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब मसीह और महदी अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने अपनी और हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आज्ञाकारिता के परिणाम के रूप में पुरस्कार "उम्मती नबी" के पद पर फ़ाइज़ फरमाया है। अत: आप ने उम्मती नबी का पद मिलने के बाद फरमाया: "अगर मैं आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सल्लल्लाहो अलैहिस्सलाम की उम्मत न होता और आप का पालन नहीं करता तो अगर दुनिया के सभी पहाड़ों के बराबर मेरे कर्म होते तो भी कभी यह बातचीत, और वार्तालाप का सौभाग्य हरगिज़ न पाता। क्योंकि अब सिवाय मुहम्मदी नबुव्वत के सभी नबुव्वतें बन्द हैं शरीयत वाला कोई नबी नहीं आ सकता और बिना शरीयत के नबी हो सकता है। परन्तु वही जो पहले उम्मती हो अत: इस कारण से मैं उम्मती भी हूं और नबी भी।"

(तजल्लियात इलाहिया, रूहानी खज़ाईन जिल्द 20 पृष्ठ 412)

अल्लाह तआला ने कुरआन की एक आयत में फ़रमाया जिसका अनुवाद यह है "उस समय को भी याद कर लो जब अल्लाह तआला ने सब नबियों वाला दृढ़ वादा लिया था कि जो भी किताब और हिक्मत की शिक्षा मैं तुम्हें दूं फिऱ तुम्हारे पास कोई ऐसा रसूल आए जो उस के कलाम को पूरा करने वाला जो तुम्हारे पास है لَتُؤْمِنُنَّ بِهٖ وَ لَتَنْصُرُنَّهٗ तुम अवश्य ही उस पर ईमान ले आना और ज़रूर उसकी मदद करना। (सूरे आले इमरान 3/82) फिर एक और आयत में, अल्लाह तआला ने फरमाया: जब हम ने नबियों से इस बात का अहद लिया और "मिन्क" (हे मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) तुझ से लिया और नूह और इब्राहीम और मूसा और ईसा इब्ने मरियम से। और हम उनसे वाचा था। (अहज़ाब 33/8)

कुरआन में दो वादों का उल्लेख है एक बनी इस्राईली के वादा एक और नबियों के वादा का जो आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से लिया गया था। (अहज़ाब) इसका मुख्य बिन्दु यह है कि जब तुम्हारे पास कोई रसूल आएं जो वही बातें कहें जो तुम कहते थे तो स्वीकार करो कि कभी उन को अस्वीकार नहीं करोगे बल्कि सत्यापित करोगे। यहाँ यह समझाना आवश्यक है कि नबियों की तरफ तो रसूल नहीं भेजे, उनकी जातियों के पास रसूल आते हीं। यही अभिप्राय है कि अपनी क़ौम को नसीहत करते रहें कि जब भी तुम्हारे पास कोई रसूल आए जो मेरी सत्यता करने वाले हों तो उसका इनकार नहीं करना बल्कि ज़रूर उसकी मदद करनी है।

(हज़रत खलीफतुल मसीह राबि के कुरआन के अनुवाद से)

सारांक्ष यह है कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के द्वारा से उम्मते मुहम्मदिया यह वादा लिया गया था कि हे मुस्लमानों! जब तुम में वह उम्मती नबी आए जो सूरे अलजुमए में वर्णित आख़रीन को उम्मिय्यीन से मिलाने वाला हो। तो उस पर ज़रूर ईमान लाना और मदद करना। वह आने वाला फारस की नस्ल में से एक व्यक्ति होगा (दूसरा) मसीह और महदी होगा। आप ने मुसलमानों को आदेश दिया

فَاِذَا رَأَيْتُمُوهُ فَبَايِعُوهُ وَلَوْ حَبْوًا عَلَى الثَّلْجِ فَإِنَّهُ خَلِيفَةُ اللهِ الْمَهْدِيُّ،

(सुनन इब्ने माजा किताबुल फितन। बाब उद्भव अल महदी)

हे मुसलमानों जब तुम उसे देखो तो उसकी ज़रूर बैअत करना चाहे तुम्हें बर्फ को पहाड़ों पर घुटनों के बल ही जाना पड़े क्योंकि वह ख़ुदा का ख़लीफा महदी होगा।

आज जमाअत अहमदिया मुस्लिमा हर मुसलमान भाई से यह अनुरोध करती है कि आओ और हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का आदेश मानकर इमाम महदी के ख़लीफा के हाथ पर बैअत कर के जमाअत में शामिल हो जाएं।

मुसलमानों के 73 फिरके

याद रहे हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुसलमानों को सूचित करते हुए फरमाया था कि:

"ख़ुदा की क़सम जिसके हाथ में मुहम्मद की जान है, मेरी उम्मत 73 (तिहत्तर) फिर्कों में बिखर जाएगी। इन में से एक आजन्नत में में होगी और 72 आग में होंगे। पूछा गया हे अल्लाह के रसूल वह कौन होगा। काल قَالَ "اَلْجَمَاعَة" वह एक जमाअत होगी।

पाठकों !! 73 फिर्कों में बटे हुए मुसलमानों में से प्रत्येक फिर्का कहता है कि हमारा फिर्का जन्नती है? इस सवाल के जवाब के लिए हमें जमाअत के साथ नमाज़ पर विचार करना चाहिए । क्योंकि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जन्नती फिर्का के बारे में फरमाया था कि वह "जमाअत" होगी उदाहरण के लिए, यदि एक मस्जिद में एक सौ नमाज़ी इकट्ठा हे जाएं और उनमें से 95 सफों में खड़े हो कर ज़ुहर की नमाज़ अदा करें मगर इन का कोई इमाम न हो जो नमाज़ में उनकी इमामत करवाए तो इन 95 की नमाज़ बा-जमाअत नहीं होगी। मगर उनमें से पाँच नमाज़ी जो मस्जिद के किसी दूसरे बरामदे में एक इमाम बनाकर चार उसकी इमामत में नमाज़ अदा कर लें, तो इन पांचों की नमाज़ बा-नमाज़ कहलाएगी।

बिल्कुल यही हालत जमाअत अहमदिया मुस्लिमा और बाकी फिर्कों की है। उन में से किसी फिर्के की इमामत और नेतृत्व ऐसे इमाम या ख़लीफा नहीं कर रहे जैसे अल्लाह तआला ने ख़लीफा बनाया हो। सिर्फ जमाअत अहमदिया मुस्लिमा ऐसी जमाअत है जिनके ख़लीफा को अल्लाह तआला ने ख़लीफा बनाया है और सारी दुनिया के अहमदी आप की इमामत व नेतृत्व में इस्लामी शिक्षाओं के अनुसार जीवन बिताते हैं और दिन-रात इस्लाम की सेवा की ज़िम्मेदारी निभा रहे हैं। इसलिए केवल जमाअत अहमदिया ही वह एकमात्र जमाअत है जो "जमाअत" कहलाने की हकदार है।

जमाअत अहमदिया मुस्लिमा को काफिर क्यों कहा गया?

एक और सवाल जो ग़ैर जमाअत वाले पूछते हैं कि कुछ हकूमतों की पार्लियामेन्ट या मक्का की राब्ता अलमें इस्लामी में शामिल 72 समुदायों के मुसलमान नेताओं ने जमाअत अहमदिया को ग़ैर मुस्लिम और काफ़िर क़रार दिया है? ऐसा क्यों है?

कृपया ध्यान दें कि मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुस्लमानों के 72 फिर्कों के बारे में फरमाया था कि फिन्नार वे दोज़खी हैं।

प्रश्न: एक फिर्का के बारे में फरमाया, "फिलजन्नत" वह जन्नती होगा है।

प्रत्येक मुसलमान जानता है कि मुसलमान 72 फिर्कों में बटे हुए हैं । शीया

पृष्ठ 11 पर शेष

ख़ुत्बः जुमअः

पाकिस्तान में राजनेता भी उलमा भी यदा कदा किसी न किसी बहाने से अहमिदयों के ख़िलाफ अपना ग़ुबार निकालते रहते हैं। उन के विचार में क़ौम को अपने पीछे चलाने और अपनी बात मनवाने और प्रसिद्धि पाने का यह सब से आसान तरीका है और सब से बड़ा हथियार जो मुसलमानों की भावनाओं को भड़काने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है कि बड़ा हथियार ख़त्मे नबुव्वत का हथियार है अतः जब भी किसी राजनीतिक पार्टी की साख ख़राब हो रही हो जब भी किसी राजनेता की पसंदीदगी का ग्राफ गिर रहा हो, या गुणवत्ता कम हो रही हो, जब भी तथाकथित धार्मिक संगठन राजनीतिक प्रतिष्ठा प्राप्त करना चाहें, दूसरे संगठन, दूसरी राजनीतिक पार्टी या अन्य राजनेता को नीचा प्रदर्शित करना चाहें तो अहमदियों के साथ उनके संबंध जोड़कर यह कहते हैं कि देखो कितना बड़ा अन्याय होने लगा है कि विदेशी शक्तियों के पदचिन्ह पर ये लोग अहमदियों को मुख्यधारा के मुसलमानों में शामिल करना चाहते हैं या कर रहे हैं जबकि अहमदी उनके विचार मैं ख़त्मे नबुव्वत का इंकार करने वाले हैं।

पिछले दिनों पाकिस्तान की नेशनल असेंबली में एक संशोधन के शब्दों में फेरबदल में जो राजनीतिक पार्टी या सरकारी पार्टी अपने हितों के लिए कर रही थी इस क्रम में यही बात हमें देखने में आई।

जहां तक जमाअत अहमदिया का संबंध है न ही हम ने किसी ग़ैर मुल्की ताकत से कहा कि हमें पाकिस्तानी असंबली को कानून में तब्दीली करवा कर कानून की नज़र में मुसलमान बनावाया जाए। न ही हम ने किसी पाकिस्तानी हुकमूत से कभी इस बात की भीख मांगी है न ही हमें किसी विधान सभा या संविधान से मुसलमान कहलाने के लिए किसी सर्टीफीकेट की ज़रूरत है। किसी प्रमाण पत्र की आवश्यकता है। हम अपने आप को मुसलमान कहते हैं क्योंकि हम मुसलमान हैं। हमें अल्लाह तआला और उसके रसूल ने मुसलमान कहा है। हम कलमा ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह पढ़ने वाले हैं हम इस्लाम के सारे अरकान और ईमान के अरकान पर विश्वास रखते हैं। हम कुरआन में विश्वास रखते हैं और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ातमन्नबिय्यीन मानते हैं

हम इस बात पर दिल की गहराई से कायम हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ातमन्नबिय्यीन हैं बल्कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने साफ-साफ और स्पष्ट लिखा है। कई जगह यह विवरण किया है कि जो ख़त्मे नबुव्वत का इनकार करने वाला है, मैं इसे नास्तिक और इस्लाम से बाहर समझता हूँ। वह न अहमदी है, न मुसलमान। अतः हमारे ख़िलाफ यह विद्रोह पैदा किया जा रहा है और हम पर जो आरोप लगाया जाता है कि हम ख़त्मे नबुव्वत का इनकार करने वाले हैं और नऊज़ो बिल्लाह आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ातमन्नबिय्यीन नहीं मानते यह निहायत घटिया और गंदा आरोप है जो हम पर लगाया जाता है।

हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की कुछ ऐसी लेखनी और उपदेश का वर्णन जिन में आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के स्थान ख़ातमन्नबिय्यीन की अत्याधिक हिक्मत वाली व्याख्या और ख़त्मे नबुब्बत की वास्तविकता को वर्णन किया गया है।

यदि हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इलहामों को नऊज़ो बिल्लाह कुरआन से बेहतर समझते तो हम जो आजकल दुनिया में खर्च कर और ख़ुद माली कुरबानी करके कुरआन का अनुवाद प्रकाशित कर रहे हैं उनके बजाय हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इल्हाम प्रकाशित करते। अब तक 75 भाषाओं में कुरआन का पूरा अनुवाद प्रकाशित हो चुके हैं और कुछ भाषाओं में अभी अनुवाद हो रहे हैं। इंशा अल्लाह जल्द प्रकाशित हो जाएंगे। 111 भाषाओं में कुरआन की चुनी हुई आयतों को प्रकाशित किया गया है। बड़ी बड़ी इस्लामी सरकारें बताएं और बड़ी पैसे वाली जो धार्मिक संस्थाएं हैं वे तो ज़रा बताएं कि उन्होंने कितनी भाषाओं में कुरआन के अनुवाद किए हैं।?

ख़ातमन्नबिय्यीन के वास्तविक अर्थ और रूह को भी हम अहमदी ही समझते हैं और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़ातमन्नबिय्यीन होने के बारे में अल्लाह तआला की घोषणा का प्रकाशन भी दुनिया के विभिन्न देशों में उनकी भाषाओं में अहमदी ही कर रहे हैं। फिर भी, वे दावा करते हैं कि अहमदी नऊज़ बिल्लाह ख़त्मे नबुव्वत का इन्कार करने वाले हैं।

आजकल के उलमा आपस में तो एक-दूसरे पर आरोप लगा रहे हैं लेकिन यह हिम्मत नहीं है कि दूसरे धर्मों को उनका चेहरा दिखाकर उनकी कमज़ोरियां दिखाएँ और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की श्रेष्ठता साबित करें। यह काम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के प्रशिक्षण और ज्ञान की वजह से जमाअत अहमिदया कर रही है, लेकिन फिर भी उन की नज़र में हम कफिर और ये मोमिन।

पाकिस्तान की विधानसभा में कानून बनाने के शब्दों के बारे में उनके जो आपस के मामले तय थे उनके तय हो जाने के बाद फिर कुछ दिन पहले एक विधायक ने बेवजह एक उत्तेजना दिलाने वाला भाषण दिया है। यह केवल विधानसभा के सदस्यों को झूठा सम्मान दिलाने के लिए नहीं था बल्कि इसके साथ ही जनता को भड़काने और देश में शरारत पैदा करने की एक कोशिश थी ताकि अहमदियों के ख़िलाफ सारे उठ खड़े हों। और यह भी कोशिश थी कि अपने आप को देश का बड़ा वफादार नेता साबित करे ताकि उसके राजनीतिक जीवन को शायद कोई नया जीवन मिल जाए।

अपनी ओर से बड़ा मैदान मारने वाले इस विधायक ने कहा कि हमारा सम्मान गवारा नहीं करता कि कायदे आज़म विश्वविद्यालय में भौतिकी डिपार्टमेनट का नाम डॉक्टर अब्दुस सलाम साहिब के नाम पर रखा जाए क्योंकि वे काफिर हैं वह ख़त्मे नबुव्वत पर विश्वास नहीं रखते।

इन को सोचना चाहिए था कि जिस ने यह नाम रखा है वह तो ख़ुद उन की अपनी ही पार्टी के प्रधानमंत्री थे और राष्ट्रपति थे और यही नहीं बल्कि उस विधायक के ससुर भी हैं तब क्यों न सम्मान दिखाया और उस समय क्यों ग़ैरत को प्रकट न किया जब यह सब कुछ हो रहा था
यदि पाकिस्तान की विधानसभा इस नाम को बदलना चाहती है, तो बड़ी ख़ुशी से बदले। सलाम ख़ानदान को या जमाअत अहमदिया को इस से कोई अन्तर नहीं पढ़ता।

फिर कहते हैं कि अहमदियों को सेना में भर्ती नहीं करना चाहिए। आज तक की पाकिस्तान की तारीख़ हमें यह बताती है कि अहमदी जितने भी फौज में गए थे उन्होंने देश के लिए हर कुरबानी दी। आमतौर पर फौज की कुर्बानी पुलिस की या अधिकतम जूनियर आयुक्त अधिकारी या कर्नल मेजर तक लोग करते हैं लेकिन अहमदी वे लोग हैं जिनके लोग जनरल रैंक तक भी पहुंचे तो अगले मोर्चों पर रहे और शहीद भी हुए तो अहमदी जनरल।

अहमदियों पर आपत्ति है कि वे देश की सेवा नहीं करते हैं, वे इस देश के वफादार नहीं हैं, लेकिन मैं पूरी तरह से कह सकता हूं कि आज पाकिस्तान में अहमदी जो हैं जो "हुब्बुल वत्ने मिनिल" पर विश्वास रखते हैं और इस का पालन करते हैं, अपना जान माल कुर्बान करने वाले हैं। सयासी दुकानदारी चमकाने के लिए केवल तकरीरें करने वाले नहीं हैं और न ही हमारा राजनीति से कोई संबंध है। हम धर्म के कारण जान देने वाले तो हैं, लेकिन धर्म के नाम पर राजनीति चमकाने वाले और धर्म के नाम पर ख़ून करने वाले नहीं हैं। हम आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ातमन्नबिय्यीन तो मानते हैं और दिल से मानते हैं और आप के सम्मान के लिए प्रत्येक कुरबानी देने वाले हैं और देने के लिए तय्यार हैं और दे रहें हैं और इन्शा अल्लाह देते रहेंगे। प्रत्येक पाकिस्तानी अहमदी का फर्ज़ है कि यह दुआ करता रहे कि अल्लाह तआला इस देश को जिस के लिए अहमदियों ने कुर्बानियां भी दीं और आरम्भ से लेकर आज तक कुर्बानियां दे रहे हैं, अल्लाह तआला इसे हमेशा सलामत रखे और अत्याचारी और ज़ुल्म करने वाले और स्वार्थ वाले उलमा से इसे बचाए और दुनिया के आज़ाद और सम्मान वाले देशों में पाकिस्तान की भी गिनती होने लगे।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 13 अक्तूबर 2017 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُلِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ ۔

مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَآ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ وَ لٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَ خَاتَمَ النَّبِيّٖنَ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا (अहज़ाब: 41)

इस आयत का यह अनुवाद है कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तुम्हारे जैसे पुरुषों में से किसी के बाप नहीं बल्कि वह अल्लाह के रसूल हैं और सब नबियों के ख़ातम और अल्लाह सब चीज़ों का खूब ज्ञान रखने वाला है।

पाकिस्तान में राजनेता भी उलमा भी यदा कदा किसी न किसी बहाने से अहमिदयों के ख़िलाफ अपना ग़ुबार निकालते रहते हैं। उन के विचार में क़ौम को अपने पीछे चलाने और अपनी बात मनवाने और प्रसिद्धि पाने का यह सब से आसान तरीका है और सब से बड़ा हथियार जो मुसलमानों की भावनाओं को भड़काने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है कि बड़ा हथियार ख़त्मे नबुव्वत का हथियार है अत: जब भी किसी राजनीतिक पार्टी की साख ख़राब हो रही हो जब भी किसी राजनेता की पसंदीदगी का ग्राफ गिर रहा हो, या गुणवत्ता कम हो रही हो, जब भी तथाकथित धार्मिक संगठन राजनीतिक प्रतिष्ठा प्राप्त करना चाहें, दूसरे संगठन, दूसरी राजनीतिक पार्टी या अन्य राजनेता को नीचा प्रदर्शित करना चाहें तो अहमदियों के साथ उनके संबंध जोड़कर यह कहते हैं कि देखो कितना बड़ा अन्याय होने लगा है कि विदेशी शक्तियों के पदचिन्ह पर ये लोग अहमदियों को मुख्यधारा के मुसलमानों में शामिल करना चाहते हैं या कर रहे हैं जबकि अहमदी उनके विचार मैं ख़त्मे नबुव्वत का इंकार करने वाले हैं। यह तथा कथित इस्लाम का दर्द रखने वाले कहते हैं कि कहते हैं कि हम आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सम्मान पर आंच नहीं आने देंगे और कभी एसा ज़ुल्म नहीं होने देंगे। यह कितना बड़ा ज़ुल्म है कि अहमदियों को मुसलमान कहा जाए और फिर जब ये कहते हैं कि हम इसके लिए अपनी जाने कुरबान कर देंगे, इस पर दूसरी जमाअत जो चाहे हुकमूत भी कर रही है, उसके प्रतिनिधि विधान सभा में खड़े होकर ब्यान देंगे कि सवाल ही पैदा नहीं होता कि अहमदियों को कोई अधिकार मिले बल्कि जो एक पाकिस्तानी नागरिक की हैसियत से जो थोड़ा बहुत अधिकार है चाहे वह तीसरे स्तर के शहरी की स्थिति से ही है जो थोड़े अधिकार मिले हुए हैं वह यह नारा लगाते हैं कि वह भी ले लो। प्रत्येक का अपना कोई न कोई राजनीतिक एजेंडा है। प्रत्येक व्यक्ति के अपनी निजी हित हैं, लेकिन इस में सम्बन्ध न होते हुए भी अहमिदयों को जोड़ा जाता है क्योंकि यह बहुत आसान बात है। ग़ैर सरकारी विधायक भी और सरकारी विधायक भी बढ़ बढ़कर अहमदियों के ख़िलाफ बोलते हैं।

पिछले दिनों पाकिस्तान की नेशनल असेंबली में एक संशोधन के शब्दों में फेरबदल में जो राजनीतिक पार्टी या सरकारी पार्टी अपने हितों के लिए कर रही थी इस क्रम में यही बात हमें देखने में आई। पाकिस्तान में पिछले दिनों में बड़ा शोर मचा रहा और मीडिया के माध्यम से यह सब कुछ दुनिया के सामने आ चुका है इसलिए इस बारे में तो अधिक बताने की जरूरत नहीं।

जहां तक जमाअत अहमदिया के संबंध है न ही हम ने किसी ग़ैर मुल्की ताकत से कहा कि हमें पाकिस्तानी असंबली को कानून में तब्दीली करवा कर कानून की नज़र में मुसलमान बनावाया जाए। न ही हम ने किसी पाकिस्तानी हुकमूत से कभी इस बात की भीख मांगी है न ही हमें किसी विधान सभा या संविधान से मुसलमान कहलाने के लिए किसी सर्टीफीकेट की ज़रूरत है। किसी प्रमाण पत्र की आवश्यकता है। हम अपने आप को मुसलमान कहते हैं क्योंकि हम मुसलमान हैं। हमें अल्लाह तआला और उसके रसूल ने मुसलमान कहा है। हम कलमा ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह पढ़ने वाले हैं हम इस्लाम के सारे अरकान और ईमान के अरकान पर विश्वास रखते हैं। हम कुरआन में विश्वास रखते हैं और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ातमन्नबिय्यीन मानते हैं जैसा कि कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमाया है और जिस की मैंने अभी तिलावत की है। हम इस बात पर दिल की गहराई से कायम हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ातमन्नबिय्यीन हैं बल्कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने साफ-साफ और स्पष्ट लिखा है। कई जगह यह विवरण किया है कि जो ख़त्मे नबुव्वत का इनकार करने वाला है, मैं इसे नास्तिक और इस्लाम से बाहर समझता हूँ। वह न अहमदी है, न मुसलमान। अत: हमारे ख़िलाफ यह विद्रोह पैदा किया जा रहा है और हम पर जो आरोप लगाया जाता है कि हम ख़त्मे नबुव्वत का इनकार करने वाले हैं और नऊज़ो बिल्लाह आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ातमन्नबिय्यीन नहीं मानते यह निहायत घटिया और गंदा आरोप है जो हम पर लगाया जाता है। यह आरोप जमाअत अहमदिया पर और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दावा के समय से लगाया जा रहा है और समय समय पर जब भी अपने लक्ष्य प्राप्त करने हों जैसा कि मैंने कहा इन लोगों के बारे में बवाल उठता रहता है।

हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी ने एक बार अपने एक भाषण में कहा था कि यह आरोप जो हम पर लगाते हैं इस के झूठा होने के लिए जब हम कहते हैं कि हम ख़त्मे नबुव्वत का इनकार करने वाले कैसे हो सकते हैं जब कि हम कुरआन पढ़ते हैं और कुरआन करीम पर विश्वास भी रखते हैं ईमान भी लाते हैं और क़ुरआन आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ातमन्नबिय्यीन कहता है तो उस पर ग़ैर अहमदी उलेमा इस पर आरोप करते हैं और उन्होंने जनता को भी यही सिखाया है और यह आरोप आज भी किया जाता है बल्कि आपस के संपर्कों की वजह से मीडिया की वजह से दूसरे उलेमा भी दूसरे देशों के उन पाकिस्तान के तथाकथित उलमा के पदचिह्न पर कह देते हैं कि नऊज़ बिल्लाह अहमदी तो कुरआन करीम पर ईमान नहीं लाते हैं, और मिर्ज़ा साहिब के इल्हामों को कुरआन करीम से उत्तम समझते हैं।

(उद्धरित ख़ुत्बाते महमूद जुम्अ: 4 नवम्बर 1955 ई जिल्द 36 पृष्ठ 222-223)

अत: कई अरब जब हकीकत जान कर बैअत कर के अहमदियत में शामिल होते हैं और वह यही बताते हैं कि जब हम अपने उलमा से पूछते हैं कि उनकी जमाअत के बारे में क्या राय है तो वह उसी प्रकार बातें हमें बताते हैं कि अहमदी कुरआन को नहीं मानते। उन्होंने अपना एक अलग कुरआन और किताब बनाई हुई है। यह आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को आख़री नबी नहीं मानते। बल्कि मिर्ज़ा साहिब को आख़री नबी मानते हैं। इन का हज अलग है। ये हज नहीं करते हैं। उनका क़िबला और है। काबा की तरफ मुंह करके नमाज़ नहीं पढ़ते और ये लोग कहते हैं कि जब हम अनुसंधान करते हैं तो उन तथाकथित उलमा की पोल खुल जाती है और यही ग़ैर अहमदी मौलवी अपने झूठ की वजह से अहमदियों पर अपने झूठे आरोपों के कारण, कई लोगों के अहमदियत स्वीकार करने का माध्यम बन जाते हैं। अत: यह मौलवी भी झूठ बोल कर हमारी तब्लीग़ कर रहे हैं।

यह कैसे हो सकता है कि हम कुरआन को न मानें और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ातमन्नबिय्यीन विश्वास न करें जबकि ख़ुद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इलहाम क़ुरआन को ख़ुदा तआला की किताब कहते हैं और सब भलाई का स्रोत इसे समझते हैं आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ातमन्नबिय्यीन समझते हैं। अत: आप का एक इल्हाम कुरआन के बारे में है اَلْخَيْرُ كُلُّهٗ فِي الْقُرْآن (अन्जामे आथम रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 11 पृष्ठ) कि सारी भलाई कुरआन करीम में है। इसी प्रकार आपने यह भी फरमाया कि जो कुरआन को सम्मान देंगे वो आसमान पर इज़्ज़त पाऐंगे।

(कश्ती नूह रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 19 पृष्ठ 13)

यह कहीं नहीं फरमाया कि मेरे इल्हामों को सम्मान दो। आपके इल्हाम कुरआन के सेवक हैं, उनकी कोई अलग और स्थायी स्थिति नहीं है। जो भी भलाईयाँ हम ने तलाश करनी हैं जो भी निर्देश हम ने तलाश करना है, समाज के किसी मामले के बारे में हम ने निर्देश लेने हैं, तो वह कुरआन से ही हम लेते हैं और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कई इलहाम उनकी वर्णन और व्याख्या भी करते हैं। इसी तरह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के भी आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़ातमन्नबिय्यीन होने के बारे में अनगिनत लेखनी हैं और इस के अलावा एक यह इल्हाम भी है जिस में ख़ातमन्नबिय्यीन का शब्द भी आता है इल्हाम यह है कि

صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ آلِ مُحَمَّدٍ سَيِّدِ وُلْدِ آدَمَ وَ خَاتَمِ النَّبِيِّن

कि दरूद भेज मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आले मुहम्मद पर जो सरदार है आदिम के बेटों का और ख़ातमुल अंबिया है। सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम।

(ब्राहीने अहमदिया रूहानी ख़जायन भाग 1 पृष्ठ 597 हाशिया)

और यह इल्हाम अलग-अलग समय में दो अलग-अलग जगहों पर हुआ है। फिर यह इल्हाम कि كُلُّ بَرَكَةٍ مِنْ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ कि प्रत्येक बरकत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ से है।

(हकीकतुल वह्यी रूहानी ख़जायन भाग 22 पृष्ठ 73)

फिर आप अपनी किताब "तजल्लियाते इलाहिया" में लिखते हैं कि "अगर मैं आंहज़रत इस्लाम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उम्मत न होता और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का पालन नहीं करता तो अगर दुनिया के सभी पहाड़ों के बराबर मेरे कर्म होते तो भी यह बातचीत का श्रेय न पाता और अब मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नबुव्वत के अतिरिक्त सब नबुव्वते बन्द हैं।"

(तजल्लियाते इलाहिया रूहानी ख़जायन भाग 20 पृष्ठ 412-413)

अत: हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम भी आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अधीन हैं और आप के इलहाम भी कुरआन करीम के अधीन और इस का स्पषटीकरण हैं।

यदि हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इलहामों को नऊज़ो बिल्लाह कुरआन से बेहतर समझते तो हम जो आजकल दुनिया में खर्च कर और ख़ुद माली कुरबानी करके कुरआन का अनुवाद प्रकाशित कर रहे हैं उनके बजाय हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इल्हाम प्रकाशित करते। अब तक 75 भाषाओं में कुरआन का पूरी अनुवाद प्रकाशित हो चुके हैं और कुछ भाषाओं में अभी अनुवाद हो रहे हैं। इंशा अल्लाह जल्द प्रकाशित हो जाएंगे। 111 भाषाओं में कुरआन की चुनी हुई आयतों को प्रकाशित किया गया है।

बड़ी बड़ी इस्लामी सरकारें बताएं और बड़ी पैसे वाली जो धार्मिक संस्थाएं हैं वे तो ज़रा बताएं कि उन्होंने कितनी भाषाओं में कुरआन के अनुवाद किए हैं।?

ख़ातमन्नबिय्यीन के वास्तविक अर्थ और रूह को भी हम अहमदी ही समझते हैं और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़ातमन्नबिय्यीन होने के बारे में अल्लाह तआला की घोषणा का प्रकाशन भी दुनिया के विभिन्न देशों में उनकी भाषाओं में अहमदी ही कर रहे हैं। फिर भी, वे दावा करते हैं कि अहमदी नऊज़ बिल्लाह ख़त्मे नबुव्वत का इन्कार करने वाले हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें खत्मे नबुव्वत की वास्तविकता की वह समझ और एहसास प्रदान फरमाया है जिसके पास भी ये लोग जो ख़त्मे नबुव्वत का झंडा उठाने के दावेदार हैं नहीं पहुँच सकते। आप अलैहिस्सलाम ने इस बात को स्पष्ट करते हुए कि क्या हम रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ातमन्नबिय्यीन मानते हैं या नहीं एक मज्लिस में आप ने फरमाया,

"यह भी याद रखना चाहिए कि मुझ पर और मेरी जमाअत पर आरोप लगाया जाता है कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ातमन्नबिय्यीन नहीं मानते यह हम पर महान झूठ है। हम जिस विश्वास और ज्ञान और समझ के साथ आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ातमन्नबिय्यीन मानते और विश्वास करते हैं उस का लाखवां हिस्सा भी दूसरे लोग नहीं मानते और उन में ऐसा सामर्थय ही नहीं है। वह इस तथ्य और राज़ को जो ख़ातमुल अंबिया की ख़त्मे नबुव्वत में है समझते ही नहीं। उन्होंने केवल बाप दादा से एक शब्द सुना हुआ है लेकिन इस तथ्य से अनजान हैं और नहीं जानते कि ख़त्मे नबुव्वत क्या होता है और उस पर ईमान लाने का अर्थ क्या है? (जिस को अल्लाह तआला बेहतर जानता है) आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ातमुल अंबिया विश्वास करते हैं और ख़ुदा तआला ने हम पर ख़त्मे नबुव्वत की वास्तविकता को ऐसे रूप में खोल दिया है कि इस इरफान के शर्बत से जो हमें पिलाया गया है एक विशेष आन्नद पाते हैं जिसका अनुमान कोई नहीं कर सकता केवल उन लोगों के जो इस स्रोत से लाभान्वित हों।"

(मल्फूज़ात जिल्द 1 पृष्ठ 342 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

फिर ख़त्मे नबुव्वत की वास्तविकता बताते हुए आप फरमाते हैं कि

"हमें अल्लाह तआला ने वह नबी दिया जो ख़ातमुल मोमनीन, ख़ातमुल आरेफीन और ख़ातमुन्नबिय्यीन है और इसी तरह से वह किताब उस पर नाज़िल की जो जामेउल कुतब (अर्थात सारी किताबों की शिक्षाओं को अपने अन्दर समेटने वाली) और ख़ातमु कुतुब है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जो ख़ातमन्नबिय्यीन हैं और आप पर ख़त्मे नबुव्वत ख़त्म हो गई तो यह नबुव्वत इस तरह ख़त्म नहीं हुई जैसे कोई गला घोंट कर ख़त्म कर दे।" (किसी को मार दिया।) "ऐसा ख़त्म गर्व के योग्य नहीं होता बल्कि रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर नबुव्वत समाप्त होने का अर्थ यह है कि है कि भौतिक रूप में आप पर नबुव्वत के कमालात समाप्त हो गए। यानी वे सभी विविध कमालात जो आदम से लेकर मसीह मरियम तक नबियों को दिए गए किसी को कोई और किसी को कोई वे सब आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम में जमा कर दिए गए और इस तरह अपने आप, आप ख़ातमन्नबिय्यीन ठहरे और ऐसा ही वे सारी शिक्षाएं" (सारी शिक्षाओं जो हैं) "वसीयते और मआरिफ़ जो विभिन्न पुस्तकों में चले आते थे"(जो पहली शरियतों में थे) "वे कुरआन पर आ कर ख़त्म हो गए कुरआन शरीफ ख़ातमुल कुतुब ठहरा।"

(मल्फूज़ात जिल्द 1 पृष्ठ 341-342 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

अत: यह है वह वास्तविकता जिस से हमारे विरोधी अनजान हैं और जिन उलमा के चंगुल में फंसे हुए हैं वे उन्हें पकड़ से बाहर निकलने ही नहीं देना चाहते कि अगर यह तथ्य उनके पीछे चलने वालों को पता चल जाए तो फिर उन्होंने धर्म को जो कारोबार बनाया हुआ है उन का वह कारोबार नहीं चलेगा।

ख़ातमन्नबिय्यीन के अर्थ एक जगह आप ने वर्णन किए हैं। आप फरमाते हैं कि

"खत्मे नबुव्वत के बारे में मैं फिर कहना चाहता हूँ कि ख़ातमन्नबिय्यीन के बड़े अर्थ यही हैं कि नबुव्वत के मामले आदम से लेकर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ख़त्म किए। यह मोटे और ज़ाहरी अर्थ हैं दूसरे अर्थ यह हैं कि कमालाते ख़त्मे नबुव्वत का दायरा आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ख़त्म हो गया। यह सच और बिल्कुल सच है कि कुरआन शरीफ ने घटिया बातों का कमाल किया और नबुव्वत समाप्त हो गई।" (यानी कुरआन करीम की शिक्षा में वे सभी जो बातें जो पहले नबियों की दी थीं और उनकी गुणवत्ता इतनी बुलंद नहीं थी उन्हें पूर्णता तक पहुंचा दिया और आप पर वह कुरआन शरीफ की शरीयत उतारी गई और यहां ख़त्मे नबुव्वत समाप्त हो गई। कोई इंसान या आदमी इससे अधिक और कोई पूर्णता तक पहुँच ही नहीं सकता था जो कुरआन के माध्यम से पहुँच गया और वह आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर उतरा। फरमाया कि) "इस लिए اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُم (अल-माइदा 4) का प्रतिरूप इस्लाम हो गया। अत: ये नबुव्वत के निशान हैं। इनकी गुणवत्ता और स्तर पर चर्चा करने की कोई ज़रूरत नहीं है। नियम साफ और उज्जवल हैं और उन्हें प्रमाणित सत्य कहा जाता है।" फरमाया कि "इन बातों में पड़ना मोमिन को अनिवार्य नहीं। ईमाना लाना ज़रूरी है। अगर कोई विरोधी आपत्ति करे तो हम इसे रोक सकते हैं। अगर वह बंद न हो तो हम इसे कह सकते हैं कि पहले अपनी आंशिक समस्याओं का सबूत दे जो इस की समस्याएं हैं।" (इस की जो समस्याएं हैं उन का तो सबूत दे कि वे कैसे हल कर रहा है।) फरमाया कि " अत: मुहरे नबुव्वत आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के नबुव्वत के निशानों में एक निशान है।" (यानी आप का ख़ातमन्नबिय्यीन होना आप के निशानों में से एक निशान है।) "जिस पर ईमान लाना प्रत्येक मुसलमान मोमिन को ज़रूरी है।"

(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 286-287 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

अत: अगर कोई ख़त्मे नबुव्वत का इनकार करने वाला है जैसा कि मैंने पहले भी उल्लेख किया है तो आपने फ़रमाया कि वह मुसलमान ही नहीं। फिर वह इस्लाम की सीमा से निकला हुआ है।

फिर खत्मे नबुव्वत के स्थान और इस्लाम की श्रेष्ठता और दूसरे धर्मों पर क्या प्राथमिकता है, इसे साबित करते हुए आप फरमाते हैं कि

"खत्मे नबुव्वत को यूं समझ सकते हैं कि जहां पर तर्क और अनुभूति भौतिक रूप में ख़त्म हो जाती हैं वे वही सीमा है जिस का ख़त्मे नबुव्वत नाम रखा गया है, उसके बाद, अविश्वासियों की तरह आलोचना करना बेईमानों का काम है।" फरमाया कि "हर चीज़ में स्पष्ट निशान होते हैं।" (खुली खुली बातें होती हैं।) "और उनको समझना पूर्ण समझ और नूरे बसीरत पर आधारित है।" (इंसान को पूर्ण ज्ञान हो, धर्म का ज्ञान हो और अल्लाह तआला की तरफ से नूर तभी ये चीज़ें समझ आ सकती हैं।) फरमाया कि "रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आगमन से ईमान और इर्फान की पूर्णता हुई है। दूसरी कौमों को रौशनी पहुंची। किसी और कौम को स्पष्ट और खुले खुले निशान नहीं पहुंचे थे। यदि वह मिलती तो क्या वह अरब पर अपना कुछ प्रभाव नहीं डाल सकती।" (बाकी क़ौमों को पूर्ण शरीयत मिली ही नहीं जो नबी आए थे वे अपने अपने क्षेत्र के लिए आए। आप ने फरमाया कि यह दलील है कि अरबों को कुछ ख़ुदा तआला के बारे में नहीं पता था या धर्म के बारे में और जो जिनके बारे में ज्ञान भी था जिन के संपर्क भी थे उन्होंने ने भी नहीं स्वीकार किया, इसलिए कि पूर्ण शरीयत नहीं थी, पूर्ण रोशनी नहीं थी और अगर पहले धर्मों में पूर्ण रोशनी होती तो अरबों पर भी इस का प्रभाव होना चाहिए था।) फरमाया कि "अरब से वह सूर्य निकला कि जिसने हर क़ौम का प्रकाशित किया और हर बस्ती में अपना प्रकाश डाला।" लेकिन यह आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का स्थान है आप वह उज्ज्वल सूरज हैं जिन्होंने हर क़ौम को प्रकाशित किया। हर जगह हर कोने में हर शहर में आप का नूर पहुंचा। फरमाया कि) "यह कुरआन करीम को ही गर्व प्राप्त है कि वह तौहीद और नबुव्वत के मामले में सारे संसार के धर्मों पर विजय पा सकता है।"(तौहीद और नबुव्वत के मस्ले जो अल्लाह तआला ने कुरआन करीम में वर्णन फरमाए हैं वे ऐसी दलीलें हैं जो पहले किसी धर्म को दिए नहीं गए। अत: यह मतलब है कि शरीयत पूर्ण हो गई और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ातमुल अंबिया कहलाए।) फरमाया कि "यह गर्व का स्थान है कि मुसलमानों को एसी पुस्तक मिली है। जो लोग हमला करते हैं इस्लाम के शिक्षाओं और मार्गदर्शन पर आरोप लगाते हैं वे बिल्कुल बेईमानी से बोलते हैं।"

(मल्फूज़ात जिल्द 1 पृष्ठ 283 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

अत: इस्लाम ही है जो अरब से निकला और दुनिया के कोने कोने में फैल गया और आज तक अपनी मूल शिक्षा के साथ दुनिया के हर कोने में फैल रहा है और आज जमाअत अहमदिया अपनी सारी शक्तियों और संसाधनों के साथ तौहीद और ख़त्मे नबुव्वत के स्थान को दुनिया के प्रत्येक शहर और गांव सड़क में फैला रही है। इसलिए हम हैं जो ख़त्मे नबुव्वत और आप पर उतारी हुई शरीयत की पूर्ण समझ रखने वाले हैं।

यह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ही हैं जिन्होंने दूसरे धर्मों को आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के स्थान के बारे में खोलकर बताया और न केवल आप के स्थान के बारे में बताया बल्कि यह भी फरमाया कि पहले सभी नबियों की शिक्षा इस कदर बदल चुकी हैं कि इन नबियों की सच्चाई और सत्यता का पता नहीं लगाया जा सकता कि वे सच्चे थे या नहीं। यह भी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का स्थान है जो पहले नबियों की सच्चाई और सत्यता बताई। अत: आप फरमाते हैं

"शिक्षा वही पूर्ण हो सकती है, जो मानवीय शक्तियों पर पूर्ण रूप से मुरब्बी और बोझ उठाने वाली हो। न कि एक ही पहलू पर हुई हो। इंजील की शिक्षाओं को देखो कि वह क्या कहती है और इसके मुकाबला में शक्तियों की क्या शिक्षा देती हैं।? मानवीय शक्ति और प्रकृति ख़ुदा तआला की व्यवहारात्मक किताब है।" (इंसान की जो शक्तियां हैं उस की जो फितरत है ख़ुदा तआला की किताब की व्यवहारात्मक प्रकट है।) "अत: इस की जो कथनीय किताब है जो अल्लाह तआला किताब कहलाती है या उसे अल्लाह की तलीम कहो उस की बनावट और शक्ल इस के विरुद्ध कैसे हो सकती है?" (अल्लाह तआला ने कुरआन करीम में जो उस की कथनीय किताब है जो हिदायत उतारी है जो शिक्षा दी है वह कुरआन करीम है। अल्लाह की किताब कहलाती है और स्वाभाविक शिक्षा जो मानवीय स्थितियाँ हैं वह इसके ख़िलाफ नहीं हो सकतीं क्योंकि आपने फरमाया कि आदमी की शक्तियों की अवस्था और ताकत जो है वह अल्लाह तआला की कार्यात्मक किताब है और शरीयत उस की कथनीय किताब है।) फरमाया "इसी तरह अगर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम न आते तो पिछले अम्बिया की नैतिकता, निर्देश, चमत्कार और कुदसी ताकत पर आरोप होते लेकिन हुज़ूर (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने आकर उन सब को पवित्र ठहराया।" (पहले सब नबियों को सत्यापित किया।) "इसलिए आप के नबुव्वत के निशान सूर्य से अधिक उज्ज्वल है और अपार और अनगिनत हैं। अत: आप की नबुव्वत या निशाने ख़त्म नबुव्वत पर आपत्ति करना ऐसा ही है जैसा कि दिन चढ़ा हुआ हो और कोई मूर्ख नेत्रहीन कह दे कि अभी तो रात ही है। मैं फिर कहता हूं कि अन्य धर्म अंधेरे में ही रहते अगर अब तक रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम न आते। ईमान तबाह हो जाता और पृथ्वी लाअनत और अल्लाह तआला के अज़ाब से तबाह हो जाती। इस्लाम एक चिराग़ की तरह प्रकाशित है जिसने दूसरों को भी अंधेरे से निकाला है। तौरात को पढ़ो तो जन्नत और जहन्नम का पता ही मिलना मुश्किल हो जाता है। इंजील को देखो तो तौहीद का निशान नहीं मिलता अब बतलाओ कि इसमें तो संदेह नहीं कि ये दोनों किताबें अल्लाह तआला ही की तरफ से थीं और हैं लेकिन इनमें कौन सी रोशनी मिल सकती है। सच्ची रोशनी और हकीकी नूर जो नजात के लिए चाहिए वह इस्लाम में ही है। तौहीद ही को देखो कि जहां से कुरआन को खोलो वह एक नंगी तलवार की तरह नज़र आता है कि शिर्क की जड़ काट रहा है। ऐसा ही नबुव्वत के सारे पहलो ऐसे स्पष्ट और उज्ज्वल नज़र आते हैं कि उनसे अधिक होना संभव नहीं है।"

(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 282-283 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

अत: यह है ख़त्मे नबुव्वत की वह समझ जो आपने हमें दी। आजकल के उलमा आपस में तो एक-दूसरे पर आरोप लगा रहे हैं लेकिन यह हिम्मत नहीं है कि दूसरे धर्मों को उनका चेहरा दिखाकर उनकी कमज़ोरियां दिखाएँ और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की श्रेष्ठता साबित करें। यह काम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के प्रशिक्षण और ज्ञान की वजह से जमाअत अहमिदया कर रही है, लेकिन फिर भी उन की नज़र में हम कफिर और ये मोमिन।

अपने दावे की सच्चाई बताते हुए अपनी एक किताब में वर्णन करते हुए आपने फरमाया कि

" क्या ऐसा बदबख़्त मुफ़्तरी जो ख़ुद रिसालत और ख़त्मे नबुव्वत का दावा करता है कुरआन शरीफ पर ईमान रख सकता है? और क्या ऐसा वह व्यक्ति जो कुरआन शरीफ पर ईमान रखता है और आयत وَلٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ को ख़ुदा का कलाम विश्वास करता है वह कह सकता है कि मैं भी आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद रसूल और नबी हूं।? इंसाफ चाहने वालों को याद रखना चाहिए कि इस विनीत ने कभी भी और किसी भी रूप से नबुव्वत और रिसालत का दावा नहीं किया है और ग़ैर हकीकी तौर पर किसी शब्द को प्रयोग करना और शब्द कोष के साधारण अर्थों में इस को बोलचाल में लाना काफिर बनाने के लिए अनिवार्य नहीं।" (अर्थात फिर इस को काफिर नहीं बनाता) "मगर मैं उसे भी पसंद नहीं करता कि इसमें आम मुसलमानों को धोखा लग जाने की संभावना है लेकिन वह बातचीत और उपनाम जो अल्लाह तआला की तरफ से मुझे मिले हैं जिन में यह शब्द नबुव्वत और रिसालत का बहुत बार आया है उन्हें मैं मामूर होने के गुप्त नहीं रख सकता। (अल्लाह तआला ने मुझे कहा है इसलिए में छुपा नहीं सकता।) "लेकिन बार बार कहता हूँ कि इन इलहामों में जो शब्द मुरसल या रसूल या नबी का मेरे बारे में आया है वह अपने वास्तविक अर्थों में प्रयुक्त नहीं है और वास्तविक तथ्य जिस की मैं स्पष्ट गवाही देता हूँ यही है जो हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ातमुल अंबियाअ हैं और आप के बाद कोई नबी नहीं आएगा न कोई पुराना और न कोई नया।

وَمَنْ قَالَ بَعْدَ رَسُوْلِنَا وَسَيِّدِنَا إِنِّيْ نَبِيٌّ أَوْ رَسُوْلٌ عَلٰى وَجْهِ الْحَقِيْقَةِ وَالْإِفْتِرَاءِ وَتَرَكَ الْقُرْاٰنَ وَأَحْكَامَ الشَّرِيْعَةِ الْغَرَّاءِ فَهُوَ كَافِرٌ كَذَّابٌ

फरमाया कि " अत: हमारा धर्म यही है कि जो व्यक्ति वास्तव में नबुव्वत का दावा करे और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दामन फयूज़ से अपने आप को अलग कर के और इस पवित्र स्रोत से अलग होकर अपने आप ही सीधा नबी बनना चाहता है तो वह काफिर और नास्तिक है और यह शायद ऐसा आदमी अपना एक नया कलमा बनाएगा, और इबादत में नए तरीके बनाएगा और कुछ नियमों को बदल देगा। अत: निसंदेह वह मुसलेमा कज़्ज़ाब का भाई है और इस के काफिर होने में कुछ संदेह नहीं। ऐसे ख़बीस के बारे में, कैसे कह सकते हैं कि वह कुरआन को मानता है।"

(अन्जमे आथम रूहानी ख़ज़ायन भाग 11 पृष्ठ 27-28 हाशिया)

अत: आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी और आप की शरीयत पर चलते हुए जिस को अल्लाह तआला यह सम्मान देता है उस को तो यह सम्मान मिल सकता है दूसरे को नहीं। और न ही कोई आप की ग़ुलामी से बाहर जाकर मुसलमान कहला सकता है।

फिर आगे स्पष्टीकरण करते हुए फरमाते हैं कि

"हम मुसलमान हैं और हम ख़ुदा तआला की किताब फ़ुर्कान मजीद पर ईमान लाते हैं और यह भी मानते हैं कि हमारे आक़ा मुहम्मद रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ुदा तआला के नबी और उस के रसूल हैं और यह कि आप बेहतीरन धर्म लेकर आए हैं और इस बात पर भी ईमान रखते हैं कि आप ख़ातमुल अंबियाय हैं और आप के बाद कोई नबी नहीं मगर वही जिस का प्रशिक्षण आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के फैज़ से हुआ हो।" (जिस तरह कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का हुआ) "और जिस का ज़हूर आप की भविष्यवाणी के अनुसार हुआ और अल्लाह तआला इस उम्मत के औलिया को अपने वार्तालापों और मुख़ातबत से सम्मानित कता है और उन्हें नबियों के रंग से रंगीन किया जाता है लेकिन वह वास्तव में नबी नहीं होते क्योंकि कुरआन ने शरीयत की सारी आवश्यकताओं को पूरा कर दिया है और उन्हें कुरआन की समझ दी जाती है लेकिन वे न तो कुरआन में किसी प्रकार की वृद्धि करते हैं और न इसमें कोई कमी करते हैं और जिस व्यक्ति ने कुरआन में कोई वृद्धि की या कोई हिस्सा कम किया तो वह शैतान दुराचारी है।

और ख़त्मे नबुव्वत से हम यह मुराद लेते हैं कि हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर जो अल्लाह तआला के सब रसूलों और नबियों से बेहतर हैं सभी कमालाते ख़त्मे नबुव्वत ख़त्म हो गए हैं और हम यह विश्वास रखते हैं कि आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के बाद ख़त्मे नबुव्वत के स्थान पर वही व्यक्ति आसीन हो सकता है जो आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की उम्मत में से हो और आप का पूर्ण अनुकरण करने वाला हो और उसने सारा का सारा फैज़ आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की आध्यात्मिकता से पाया हो और वह आपके नूर से प्रकाशित हुआ हो। इस स्थान में कोई ग़ैरत नहीं और न ही यह ग़ैरत की जगह है और यह कोई अलग नबुव्वत नहीं और न ही आश्चर्य का स्थान है बल्कि यह अहमद मुज्तबा ही है जो दूसरे आईने में प्रकट हुआ है और कोई व्यक्ति अपनी तस्वीर पर जिसे अल्लाह तआला ने आइना में दिखाया हो ग़ैरत नहीं दिखाता। क्योंकि शिष्यों और बेटों पर ग़ैरत जोश में नहीं आती। अत: जो आदमी नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से फ़ैज़ पाकर और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम में फना होकर आए वह वास्तव में वही है क्योंकि वह पूर्ण फना के स्थान पर होता है और आप के रंग में ही रंगीन और आप ही की चादर ओढ़े हुए होता है और आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) से ही उसने अपना आध्यात्मिक अस्तित्व प्राप्त किया होता है और आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के फ़ैज़ से ही उसका अस्तित्व पूर्णता को पहुंचा होता है और यही वह अधिकार है जो हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बरकतों पर गवाह है और लोग नबी करीम का हुस्न उनके के ताबेईन के कपड़ों में देखते हैं जो अपने पूर्ण प्रेम तथा सफाई के कारण आप के अस्तित्व में फना हो गए और इसके ख़िलाफ बहस करना अज्ञानता है क्योंकि यह तो आप के अबतर (नि:सन्तान) न होने का अल्लाह तआला की तरफ से सबूत है और सोचने वाले के लिए इस के लिए विस्तार की ज़रूरत नहीं है और आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) तो शारीरिक रूप से तो पुरुषों में से किसी के बाप नहीं लेकिन अपनी रिसालत के फैज़ के कारण से हर उस आदमी के पिता हैं जिसने आध्यात्मिकता में पूर्णता को प्राप्त किया और आप सभी नबियों के ख़ात्म और सभी मकबूलों के सरदार हैं और अब ख़ुदा तआला की दरगाह में वही व्यक्ति प्रवेश कर सकता है, जिसके पास आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहर के की तस्दीक हो और आप की सुन्नत पर पूरी तरह से अनुकरण करने वाला हो और अब कर्म और इबादत आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की रिसालत के स्वीकार किए बिना और आप के धर्म पर दृढ़ रहने के अतिरिक्त ख़ुदा तआला के सम्मुख लोकप्रिय नहीं होगा और जो आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) से अलग हो गया और उसने अपने सामर्थय और शक्ति के अनुसार आप का पालन न किया वह मारा गया। आप के बाद अब कोई शरीयत नहीं आ सकती और न कोई आप की किताब और आप के आदेश को रद्द कर सकता है और न कोई आप के पवित्र शब्दों को बदल सकता है और कोई बारिश आप की मूसलाधार बारिश की तरह नहीं हो सकती"(अर्थात रूहानी बारिश) "और जो कुरआन करीम की यानी रूहानी बारिश के पालन से कण भर भी दूर हुआ वह ईमान के दायरा से बाहर हो गया और उस समय तक कोई व्यक्ति कभी सफल नहीं हो सकता जब तक वह इन सभी बातों का पालन न करे जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से प्रमाणित हैं और जिस ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वसीयतों में से कोई छोटी से छोटी वसीयत भी छोड़ दी तो वह गुमराह हो गया और जिस ने इस उम्मत में नबुव्वत का दावा किया और यह आस्था न रखी कि वह ख़ैरुल बशर मुहम्मद मुस्तफा का ही प्रशिक्षण प्राप्त है और आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के उस्वा हस्ना के बिना तुच्छ मात्र है" (उस की कोई स्थिति नहीं) "और यह कि क़ुरआन करीम ख़ातमुल शरीयत है तो वह मारा गया और वे काफिरों और फ़ाजिरों में जा मिला और जिसने ख़त्मे नबुव्वत का दावा किया और यह ईमान न रखा कि वह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ही उम्मत में से है और यह कि जो कुछ उसने पाया है वह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ही फैज़ द्वारा पाया है,वह आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के बाग़ का ही फल है और आप की ही मुसलाधार बारिश की एक बूंद और आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की ही रोशनी की एक किरण है तो वह लअनती है और इस पर और उसके साथियों पर और उसके अनुसरण करने वालों और मददगारों पर अल्लाह तआला की लानत हो।"

(तो यह लअनत हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने ऊपर या जमाअत के ऊपर तो नहीं भेज रहे। इसका मतलब है कि आप समझते हैं कि आप को सबसे अधिक रूहानी फ़ैज़ आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पहुंचा और आप ही इस स्थान पर पहुंचे जहां अल्लाह तआला ने आप के अनुसरण में ग़ैर शरई नबुव्वत का सम्मान दिया।)

आप फरमाते हैं "आकाश के नीचे मुहम्मद मुजतबा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अलावा हमारा कोई नबी नहीं और कुरआन के अलावा हमारी कोई किताब नहीं है और जिसने भी इसका विरोध किया वह अपने आप को जहन्नम की तरफ खींचकर ले गया।"

(मवाहेबुर्रहमान रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 19 पृष्ठ 285 से 287 अरबी से उर्दू अनुवाद उद्धरित तफ्सीर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम सूरत अल- अहज़ाब आयत 41 जिल्द 3पृष्ठ 699 से 701)

आप ने कई स्थानों पर खोल खोलकर ख़त्मे नबुव्वत की वास्तविकता और उसके स्थान और इस के मुकाबला में अपने स्थान और स्थिति का उल्लेख किया है और फरमाया है कि यदि मुसलमान धर्म पर कायम होते और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का वास्तविक अनुकरण करने वाले होते तो मेरे आने की ज़रूरत ही क्या थी।

इसलिए एक जगह आप फरमाते हैं कि

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

" दुनिया के उदाहरण में से हम ख़त्मे नबुव्वत का उदाहरण इस तरह दे सकते हैं कि जैसे चाँद हिलाल से शुरू होता है और चौदहवीं तारीख़ पर आकर उसका कमाल हो जाता है, जबकि इसे बदर कहा जाता है इसी तरह पर आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर आ कर कमाले नबुव्वत समाप्त हो गए। जो लोग यह विचार रखते हैं कि ख़त्मे नबुव्वत जबरन समाप्त हो गई और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यूनुस बिन मती पर भी प्राथमिकता नहीं देना चाहते उन्होंने इस तथ्य को समझा ही नहीं और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के गुण और कमालात का कोई ज्ञान ही उनके पास नहीं है। बावजूद हम इसे कमज़ोरी और ज्ञान की कमी के हम को कहते हैं कि हम ख़त्मे नबुव्वत का इंकार करने वाले हैं।" (ख़ुद तो उन्हें समझ नहीं आई लेकिन हमें कहते हैं कि हम ख़त्मे नबुव्वत का इंकार करने वाले हैं।) फरमाया कि "मैं ऐसे रोगियों को क्या कहूँ और उन पर क्या अफसोस करूं अगर उनकी यह हालत न हो गई होती और वे इस्लाम की वास्तविकता से दूर न जा पड़े होते।" (आजकल मुसलमानों की जो हालत है अगर यह न हुई होती और उन को इस्लाम का कोई पता ही नहीं। उन्हें इससे दूर न हट गए होते तो फरमाया) " तो फिर मेरे आने की क्या ज़रूरत थी? (अगर उनमें ईमान सलामत होता और उनकी आध्यात्मिकता सही होती तो फरमाया कि फिर मेरे आने की ज़रूरत ही क्या थी?) " उन लोगों की ईमानी स्थितियाँ बहुत कमज़ोर हो गई हैं और वे इस्लाम के अर्थ और उद्देश्य से केवल अपरिचित हैं अन्यथा कोई कारण नहीं हो सकता था कि वह हक वालों से वैर करते जिसका परिणाम काफिर बना देता है"

(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 342-343 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

अर्थात जो सच्चाई पर है जो अल्लाह तआला की तरफ से भेजा गया है और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर पूर्ण ईमान और विश्वास रखता है उस से वैर और दुश्मनी करने वाला कोई कारण नहीं था कि की जाती। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से दुश्मनी की जाती ।क्योंकि अल्लाह तआला के भेजे हुए से दुशमनी करना फिर काफिर बना देता है इसलिए यह लोग क्योंकि हमें काफिर कहते हैं और मुसलमान कलमा पढ़ने वाले को काफिर कहने वाला इस्लाम के दायरे से बाहर कर देता है ख़ुदा आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीस भी इस बारे में है।

(सुनन अबू दाऊद किताबुस्सुन्नत हदीस 4687)

अत: ये लोग जो हमें काफिर कहते हैं ख़ुद इस दायरे के अन्दर आ जाते हैं इसलिए सहानुभूति की भावना से हम इन कलमा पढ़ने वालों से यही कहते हैं कि अपनी अवस्थाओं पर रहम करो और देखो और समझो कि ख़ुदा तआला क्या चाहता है और क्या कह रहा है।?

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के यह कुछ उद्धरण जो मैंने प्रस्तुत किए हैं काश ये शरीफ फितरत मुसलमानों के लिए हिदायत का कारण बन जाएं और वह हम पर आरोप लगाने की बजाय अपनी अवस्थाओं को देखें।

पाकिस्तान की विधानसभा में कानून बनाने के शब्दों के बारे में उनके जो आपस के मामले तय थे उनके तय हो जाने के बाद फिर कुछ दिन पहले एक विधायक ने बेवजह एक उत्तेजना दिलाने वाला भाषण किया है। यह केवल विधानसभा के सदस्यों को झूठा सम्मान दिलाने के लिए नहीं थी बल्कि इसके साथ ही जनता को भड़काने और देश में शरारत पैदा करने की एक कोशिश थी ताकि अहमदियों के ख़िलाफ सारे उठ खड़े हों। और यह भी कोशिश थी कि अपने आप को देश का बड़ा वफादार नेता साबित करे ताकि उसके राजनीतिक जीवन को शायद कोई नया जीवन मिल जाए लेकिन इस पर वहाँ के कुछ बुद्धि रखने वाले राजनीतिज्ञों और मीडिया के लोगों ने और शरीफ वर्ग ने घृणा भी व्यक्त की है। इसलिए हमें इस लिहाज़ से भी उम्मीद रखनी चाहिए कि पाकिस्तान में शरीफ़ों का ऐसा वर्ग है जिस ने ग़लत काम के ख़िलाफ आवाज़ उठाना शुरू कर दिया है और उन लोगों ने फिर उसे तथ्य भी बताए कि तुम जो जो आरोप लगा रहो हो इसमें सच्चाई क्या है?

अपनी ओर से बड़ा मैदान मारने वाले इस विधायक ने कहा कि हमारा सम्मान गवारा नहीं करता कि कायदे आज़म विश्वविद्यालय में भौतिकी डिपार्टमेनट का नाम डॉक्टर अब्दुस सलाम साहिब के नाम पर रखा जाए क्योंकि वे काफिर हैं वह ख़त्मे नबुव्वत पर विश्वास नहीं रखते।

इन को सोचना चाहिए था कि जिस ने यह नाम रखा है वह तो ख़ुद उन की अपनी ही पार्टी के प्रधानमंत्री थे और राष्ट्रपति थे और यही नहीं बल्कि उस विधायक के ससुर भी हैं तब क्यों न सम्मान दिखाया और उस समय क्यों ग़ैरत को प्रकट न किया जब यह सब कुछ हो रहा था केवल इसलिए कि अब क्योंकि इस पार्टी पर आरोप लग रहा है और यह समझते हैं कि हमारे बचने का एक ही माध्यम है कि अहमदियों के ख़िलाफ जो कुछ मुंह में आता है बोलते चले जाओ।

बाकी जहां तक अहमदियों का सवाल है हमें इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि नाम रखा है या नहीं बल्कि डॉक्टर सलाम साहिब मरहूम निकटतम जो लोग हैं डाक्टर सलाम साहिब की औलाद है तो जिस दिन यह नाम रखा गया था उसी दिन डॉक्टर सलाम साहिब मरहूम के बेटे और उनकी सभी संतानों ने प्रधानमंत्री पाकिस्तान को पत्र लिखा था जिसका जवाब नहीं आया कि हमें आश्चर्य है कि डाक्टर साहब की मृत्यु के बीस साल बाद पाकिस्तान की सरकार को यह विचार आया कि पाकिस्तान के इस प्रख्यात वैज्ञानिक के नाम पर एक विभाग का नाम रखा जाए। उन्होंने यह भी लिखा कि बावजूद इसके कि मेरे पिता को पाकिस्तान के संविधान ने ग़ैर मुस्लिम करार दिया था और इस बात का उन्हें दु:ख भी था लेकिन इसके बावजूद उन्होंने अपनी पाकिस्तानी नागरिकता नहीं छोड़ी बल्कि उन्हें ब्रिटेन इटली यहां तक कि भारत की तरफ से भी नागरिकता देने की पेशकश हुई थी लेकिन उन्होंने कहा कि मैं हमेशा से पाकिस्तान का वफादार था और हमेशा पाकिस्तान का वफादार रहूँगा और उसके सुधार के लिए हमेशा कोशिश करता रहूंगा और वे करते भी रहे। बहरहाल सारांश यह कि डॉक्टर सलाम साहिब के बच्चों ने उस समय के पाकिस्तान के प्रधानमंत्री को लिखा था कि हम मुसलमान हैं और हमें जमाअत अहमदिया से अल्लाह तआला की ख़ुशी के लिए संबंध है। हम ने मसीह मौऊद को स्वीकार किया है इसलिए हम डॉक्टर सलाम के परिवार के सदस्य जो हैं, बच्चे जो हैं सरकार के इस फैसले पर खुशी व्यक्त करने के बजाय इस से सम्बंध विच्छेद करते हैं कि हमारे अधिकार पाकिस्तान में अदा नहीं किए जा रहे। जो हम कहते हैं वह हमें समझा नहीं जाता। अपने आप को इससे dissociate करते हैं। तो यह डॉ सलाम साहिब के बच्चों की प्रतिक्रिया थी।

यदि पाकिस्तान की विधानसभा इस नाम को बदलना चाहती है, तो बड़ी ख़ुशी से बदले। सलाम ख़ानदान को या जमाअत अहमदिया को इस से कोई अन्तर नहीं पढ़ता।

फिर कहते हैं कि अहमदियों को सेना में भर्ती नहीं करना चाहिए। आज तक की पाकिस्तान की तारीख़ हमें यह बताती है कि अहमदी जितने भी फौज में गए थे उन्होंने देश के लिए हर कुरबानी दी। आमतौर पर फौज की कुर्बानी पुलिस की या अधिकतम जूनियर आयुक्त अधिकारी या कर्नल मेजर तक लोग करते हैं लेकिन अहमदी वे लोग हैं जिनके लोग जनरल रैंक तक भी पहुंचे तो अगले मोर्चों पर रहे और शहीद भी हुए तो अहमदी जनरल। इसे आजकल पाकिस्तानी मीडिया भी चर्चा में ला रहा है तथ्य सामने हैं। वे कहते हैं तुम यह क्या बातें करते हो और उन्होंने नाम लिए जनरल अख्तर के, जनरल अली के। मीडिया में नाम लिया जा रहा है जनरल इफ़्तिख़ार का जो शहीद हुए थे। तो यह मेम्बर साहिब जिन्होंने बड़ी ज़ोरदार तकरीर की थी यह तो सेना में कैप्टन के पद तक पहुंचे और फिर प्रधानमंत्री या मुख्यमंत्री का दामाद बनने की वजह से सेना से इस्तीफा दे दिया और पैसे की दौड़ में शामिल हो गए और राजनीति में आए। अगर देश प्रेम की भावना थी तो फिर उन्हें सेना में रहना चाहिए था और देश के लिए कुरबानी देनी चाहिए थी।

इसी तरह, अहमदियों पर आपत्ति है कि वे देश की सेवा नहीं करते हैं, वे इस देश के वफादार नहीं हैं, लेकिन मैं पूरी तरह से कह सकता हूं कि आज पाकिस्तान में अहमदी जो हैं जो "हुब्बुल वत्ने मिनिल" पर विश्वास रखते हैं और इस पर पालन करते हैं, अपना जान माल कुर्बान करने वाले हैं। सयासी दुकानदारी चमकाने के लिए केवल तकरीरें करने वाले नहीं हैं और न ही हमारा राजनीति से कोई संबंध है। हम धर्म के कारण जान देने वाले तो हैं, लेकिन धर्म के नाम पर राजनीति चमकाने वाले और धर्म के नाम पर ख़ून करने वाले नहीं हैं। हम आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ात्मुन्नबिय्यीन तो मानते हैं और दिल से मानते हैं और आप के सम्मान के लिए प्रत्येक कुरबानी देने वाले हैं और देने के लिए तय्यार हैं और दे रहें हैं और इन्शा अल्लाह देते रहेंगे। प्रत्येक पाकिस्तानी अहमदी का फर्ज़ है कि यह दुआ करता रहे कि अल्लाह तआला इस देश को जिस के लिए अहमदियों ने कुर्बानियां भी दीं और आरम्भ से लेकर आज तक कुर्बानियां दे रहे हैं, अल्लाह तआला इसे हमेशा सलामत रखे और अत्याचारी और ज़ुल्म करने वाले और स्वार्थ वाले उलमा से इसे बचाए और दुनिया के आज़ाद और सम्मान वाले देशों में पाकिस्तान की भी गिनती होने लगे।

☆ ☆ ☆

☆ ☆

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ का दौरा जर्मनी, अगस्त 2017 ई. (भाग -1)

लंदन (यू.के) से प्रस्थान और फ्रैनकफोर्ट (जर्मनी) में आगमन परिवारिक मीटिंगें, आमीन की तकरीब (समारोह)

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

दिनांक 19 अगस्त 2017 (शनिवार)

लंदन से प्रस्थान और फ्रैनकफोर्ट (जर्मनी) में आगमन

सैयदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह बेनसरेहिल अज़ीज़ जर्मनी के सफर पर रवाना होने के लिए कार्यक्रम के अनुसार सुबह 10 बजे अपने निवास से बाहर आए। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला को अलविदा कहने के लिए सुबह से ही जमाअत के दोस्त पुरुष, महिलांए मस्जिद फज़ल लंदन के बाहरी परिसर में जमा थे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल दया से कुछ देर के लिए दोस्तों के बीच रौनक अफरोज रहे।

प्रत्येक व्यक्ति अपने प्रिय आक़ा के दर्शन से लाभांवित हुआ हुज़ूर अनवर ने अपना हाथ बढ़ा कर सभी मौजूद दर्शकों को अस्सलामो अलैकुम वरहमतुल्लाह व बराकातुहो कहा और सामूहिक रूप से दुआ करवाई। बाद में, पांच गाड़ियों पर आधारित काफिला ब्रिटेन के तटीय शहर डूवर की ओर से चला। डोवर ब्रिटेन के एक प्रसिद्ध बंदरगाह है लंदन और इसके आसपास के शहरों और क्षेत्रों में बसे लोग यूरोप का सफर Ferries के माध्यम से इसी बंदरगाह से करते हैं। Dover शहर से 11 मील पहले Folkestone के क्षेत्र में वह प्रसिद्ध Channel Tunnel है जो ब्रिटेन और फ्रांस के तटीय क्षेत्रों को आपस में जोड़ती है। इस Tunnel (सुरंग) द्वारा कारें और अन्य बड़ी गाड़ियां यात्रियों के साथ ट्रेन के माध्यम से फ्रांस के तटीय शहर Calais तक पहुंचती हैं। आज का सफर भी इसी चैनल टनल के माध्यम से था।

लंदन से आदरणीय रफीक़ अहमद हयात साहिब अमीर जमाअत अहमदिया यू.के, आदरणीय अताउल मुजीब राशिद साहिब मुबल्लिग़ इन्चार्ज यू.के, आदरणीय मुबारक अहमद ज़फर साहिब अतिरिक्त वकील माल लंदन, आदरणीय मिर्ज़ा महमूद अहमद साहिब मुख्य केन्द्रीय अडीटर, आदरणीय नसिर इनाम साहिब प्रिंसिपल जामिया अहमदिया यू.के, आदरणीय अख़लाक अहमद अंजुम साहिब वकालत तबशीयर लंदन, आदरणीय मेजर महमूद अहमद साहिब अफसर हिफाज़त ख़ास और ख़ुद्दामुल अहमदिया यू.के की सुरक्षा टीम हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ को अलविदा कहने के लिए चैनल टनल तक काफिले के साथ आए थे।

लगभग 50 मिनट के सफर के बाद11 बज कर 50 मिन्ट पर चैनल टनल पर पहुंचे। लंदन से आने वालों ने अपने प्यारे आक़ा को अलविदा। बाद में आव्रजन और अन्य सफर के मामलों के समापन के बाद कुछ समय के लिए हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ चैनल टनल पार्किंग क्षेत्र में पधारे।

ब्रिटेन के स्कूलों और कॉलेजों में छुट्टियों के कारण आज एक बहुत बड़ी संख्या चैनल टनल द्वारा यूरोप का सफर कर रही थी। जिसके कारण प्रत्येक ट्रेन लगभग आधा घंटे की देरी से चल रही थी। 1 बज कर 10 मिन्ट पर काफिले की गाड़ियां ट्रेन पर बोर्ड की गईं। यह ट्रेन 2 मंज़िलों पर आधारित थी और उसके अंदर एक समय में लगभग 180 कारें यात्रियों के साथ चढ़ाई जाती हैं। क़ाफिले की गाड़ियां दूसरी मंजिल पर चढ़ाई गई थीं

ट्रेन 1 बज कर बीस मिन्ट पर 140 कि मी की रफतार से फ्रांस के तटीय शहर calais के लिए रवाना हुई। इस सुरंग की कुल लंबाई लगभग 31 मील है और इसमें से 24 मेल का हिस्सा समुद्र तल के नीचे है। इस सुरंग का सबसे गहरा हिस्सा समुद्र तल से 75 मीटर अर्थात 250 फुट नीचे है। अब तक, किसी समुन्द्र के नीचे बनने वाली यह दुनिया की सबसे बड़ी सुरंग है।

लगभग आधे घंटे के सफर के बाद फ्रांस के स्थानीय समय के अनुसार 2 बजकर 50 मिनट पर ट्रेन फ्रांस के शहर Calais पहुंची। (फ्रांस का समय ब्रिटेन के समय से एक घंटा आगे है)। ट्रेन के रुकने के लगभग 5 मिनट बाद गाड़ियां ट्रेन से बाहर आईं और सफर मोटरमार्ग पर शुरू हुआ।

निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार यहाँ से कुछ किलोमीटर की दूरी पर स्थित एक पेट्रोल पंप के पार्किंग क्षेत्र में जमाअत जर्मनी से आए प्रतिनिधिमंडल ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ का स्वागत करना था। जर्मनी से आदरणीय अब्दुल्लाह वागस हाउज़ साहिब अमीर जमाअत जर्मनी, आदरणीय हैदर अली ज़फर साहिब मुबल्लिग़ इन्चार्ज जर्मनी, आदरणीय मुहम्मद इलयास मजूकह साहिब जनरल सैक्रेटरी व अफसर जलसा सालाना जर्मनी, आदरणीय जरीउल्लाह साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला नायब जनरल सैक्रेटरी, आदरणीय हसनात अहमद साहिब सदर मजलिस ख़ुद्दामुल अहमदिया जर्मनी, आदरणीय डॉक्टर अतहर जुबैर साहिब आदरणीय अब्दुल्लाह सपुराय साहिब और आदरणीय हमाद अहमद साहिब मुहतमिम सामान्य ख़ुद्दामुल अहमदिया जर्मनी अपने ख़ुद्दाम की सुरक्षा टीम के साथ अपने प्यारे आक़ा का स्वागत करने के लिए मौजूद थे।

यहां पहुंचने के बाद, सफर बिना रुके जारी रहा। जर्मनी से आने वाली तीन कारों में से एक कार ने काफिले को Escort किया, जबकि ख़ुद्दाम की बाकी दो गाड़ियां काफिले के पीछे थीं। कालीज़ से 55 किलोमीटर की सफर के बाद फ्रांस की सीमा पार कर के बेल्जियम के देश में प्रवेश किया। कार्यक्रम के अनुसार सीमा पार करने और यहां से 55 किलोमीटर का और सफर तय करने के बाद हाईवे पर ही एक रेस्टोरेंट Hotel Brugge Oostakamp में नमाज़े ज़ुहर तथा असर अदा करने और दोपहर के भोजन का इंतजाम किया गया था। जर्मनी से ख़ुद्दान की एक टीम पहले से ही इन मामलों को पूरा करने और प्रबंध के लिए यहां पहुंची थी।

4 बजकर 10 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ यहाँ तशरीफ़ लाए। जैसे ही हुज़ूर अनवर कार से बाहर आए तो आदरणीय अमीर साहिब जर्मनी अब्दुल्लाह वागस हाऊज़र साहिब और आदरणीय हैदर अली ज़फर साहिब मुबल्लिग़ इन्चार्ज जर्मनी ने अपने प्यारे आक़ा से शरफ़ मुलाकात प्राप्त किया। हुज़ूर अनवर ने शफकत से अमीर साहिब जर्मनी से बात की।

नमाज़ ज़ुहर तथा असर के अदा के लिए रेस्तरां में एक अलग हॉल में नमाज़ की व्यवस्था की गई थी। हुज़ूर अनवर ने नमाज़े ज़ुहर तथा असर जमा करके पढ़ाई। नमाज़ अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह अल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दया से काफिला की पांचवीम गाड़ी के बारे में पूछा कि इस समय कहां पहुंची है। क़ाफिला की एक कार दूसरी ट्रेन पर बोर्ड हुई थी जो लगभग आधे घंटे बाद रवाना हुई थी। हुज़ूर अनवर की सेवा में, यह कहा गया कि कलास पहुंच गई है और उस समय मोटरवे का सफर शुरू हो चुका है। हुज़ूर अनवर ने हिदायत फ़रमाई कि उन्हें संदेश दें कि गाड़ियां तेज़ नहीं चलानी, जो सामान्य गति है उस पर आऐं और ध्यान से चलाएं यहाँ पहुंचकर साथ मिल गए तो तो ठीक है अन्यथा बाद में पहुँच जाएंगे। बाद में यह कार क़ाफिला में शामिल हुई।

नमाज़ों के अदा करने और दोपहर के भोजन के बाद,यहां से 5 बजकर 40 मिनट पर फ्रैन्कफोर्ट के लिए प्रस्थान किया। रास्ते में आख़न के स्थान पर बेल्जियम की सीमा पार कर के जर्मनी में दाख़िल हुए और कुछ समय के लिए एक रेस्तरां के पार्किंग क्षेत्र में ठहरे। बाद में फ्रैनकफोर्ट के लिए सफर जारी रहा और Calais से फ्रैनकफोर्ट तक लगभग 600 किलोमीटर का सफर तय करने के बाद रात 10 बजकर 25 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ जमाअत जर्मनी के केंद्र बैयतुस्सुबूह फ्रैनकफोर्ट में पधारे।

बैयतुस्सुबूह के निकटवर्ती इलाके में जिस मार्ग को धारण करते हुए बैयतुस्सुबूह पहुंचा जाता था अचानक एक दुर्घटना के कारण रास्ता को बंद कर दिया गया था। जिसके कारण काफिला एक नए मार्ग से गुज़रता हुआ बैयतुस्सुबूह पहुँचा। हुज़ूर

अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ के ज्ञान में जूंही यह बात आई कि दुर्घटना की वजह से एक दूसरा रास्ता अपनाया गया है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह अल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने उसी समय हिदायत फ़रमाई कि पता करके बताएँ कि इस हादसे में कोई अहमदी दोस्त या परिवार तो नहीं है। इसलिए उसी समय जमाअत जर्मनी काफिले का नेतृत्व करने वाली कार में मौजूद जनरल सैक्रेटरी साहिब ने पता कर के हुज़ूर अनवर की सेवा में रिपोर्ट दी कि इस हादसे में कोई अहमदी दोस्त या परिवार Involve नहीं है।

बैयतुस्सुबूह में तशरीफ़ आवरी के बाद जैसे ही हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ कार से बाहर आए तो फ्रैनकफोर्ट और उसके आसपास की जमाअत और जर्मनी के कुछ विभिन्न शहरों से आए जमाअत के दोस्तों मर्दो महिलाओं और बच्चों, बच्चियों ने अपने प्यारे आक़ा का जोश से स्वागत किया और जोश और प्यार से हर तरफ हाथों को हिला रहे थे, और अहलन व सहलन की आवाज़ें ऊंची हो रही थीं। एक तरफ दोस्त बड़े जोश भरे तरीके से अपने आक़ा का स्वागत कह रहे थे तो दूसरी तरफ बच्चे और बच्चियां विभिन्न समूहों के रूप में स्वागत नज़्में और दुआ की कविताएं पढ़ रही थीं। महिलाएं दर्णन से मभांवित हो रही थीं।

आदरणीय इदरीस अहमद साहिब स्थानीय अमीर फ्रैनकफोर्ट, आदरणीय इमतियाज़ शाहीन साहिब मुबल्लिग़ फ्रैनकफोर्ट, आदरणीय मुबारक जावेद साहिब जनरल सैक्रेटरी फ्रैनकफोर्ट इमारत और आदरणीय अब्दुल समीइ साहिब विभाग संपत्ति ने हुज़ूर अनवर का स्वागत कहते हुए हाथ मिलाने का सौभाग्य प्राप्त किया।

अपने प्रिय आक़ा का स्वागत करने वाले ये दोस्त फ्रैंकफर्ट सिटी के विभिन्न अनुभागों के अलावा Hanau , Friedberg , Grobgerau , Offenbach, Dietzenbanch , Bad Hamburg, Koln, Giebeu ,Limburg ,Koblenz ,Heidelberg, Muhlheim Hamburg

शहर और जमाअतों से ये लोग अपने आक़ा के स्वागत के लिए एक लंबा सफर कर के आए थे। कोबलनज़ से आने वाले 130 कि.मी, कोलोन से आने वाले 170 कि.मी, मोल हाईम से आने वाले दोस्त 550 किलोमीटर और हमबर्ग से आने वाले 600 किलोमीटर का लंबा सफर तय करके पहुंचे थे। इन स्वागत करने वाले पुरुषों और महिलाओं और बच्चों की संख्या दो हज़ार चार सौ पचास के लगभग थी।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह अल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने अपना हाथ हिलाकर सबको अस्सलामो अलैकुम वरहमतुल्लाह व बराकातुहो कहा और दो लाईन में खड़े हुए आशिकों के बीच से गुज़रते हुए अपने निवास पर तशरीफ़ ले गए।

10:00 बज कर, 40 मिनट पर, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह ने पधार कर और नमाज़ मग़रिब इशा जमा कर के पढ़ाई नमाज़ के अदा के बाद, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह अल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने निवास क्षेत्र में चले गए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ के स्वागत के लिए जर्मनी की विभिन्न जमाअतों से जो दोस्त पुरूष, महिलाएं पहुंची थीं, इन सभी ने अपने प्यारे आक़ा के अनुसरण में नमाज़ मग़रिब और इशा अदा करने की सआदत पाई। उनमें से एक बड़ी संख्या ऐसे ख़ुशनसीब दोस्तों और युवाओं की थी जो पिछले कुछ महीनों के दौरान पाकिस्तान से किसी स्रोत से यहां पहुंचे थे और उनके जीवन में अपने प्यारे आक़ा का अनुसरण में यह पहली दुआ थी। ये सभी इस सौभाग्य की उपलब्धि पर प्रसन्न हुए थे, और वे इन बरकत वाले क्षणों से लाभान्वित हो रहे थे जो उन के जीवन में पहली बार आया थी और उन्हें तृप्त कर रह था। अल्लाह तआला ये बरकतें और ये सौभाग्य हम सब के लिए मुबारक करे और हमारी अगली नस्लें और बच्चे भी ख़ुदा तआला के इन पुरस्कारों को हमेशा प्राप्त करते रहें।

दिनांक 20 अगस्त 2017 (रविवार)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह 5 बज कर 25 मिन्ट पर नमाज़ फज्र अदा का। नमाज़ के बाद, अदा के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने आवास पर चले गए। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह दफतर के ख़त और डाक को देखा। और हिदायतें दीं हुज़ूर अनवर विभिन्न कार्यालय के मामलों के व्यस्त रहे।

परिवारों की मुलाकात

कार्यक्रम के अनुसार 11 बजकर 20 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ अपने कार्यालय पधारे और परिवारों से मीटिंगें शुरू होईं। आज सुबह इस सत्र में 60 परिवारों के 190 लोगों ने अपने प्यारे आक़ा से मिलने का सौभाग्य पाया। मुलाकात करने वाले यह परिवार जर्मनी की निम्नलिखित विभिन्न जमाअतों से आए थे

Dietzenbach, Reichelshiem ,Wetter , Hanau , Friedberg ,Riedstadt , Mainz , Stuttgart , Pforzheim , Calw, Waiblingen , Pfunsgtadt ,Reinheim , Morfeldon , Rodermark , Ginsheim , Eppelheim ,
लिम्बर्ग, ग्रासग्राओ, फ्रैनकफोर्ट

कुछ परिवार और दोस्त एक लंबा सफर तय करके पहुंची थीं। Pforzheim से आने वाले 180 कि.मी, Koln से आने वाले 190 कि.मी, Stuttgart से आने वाले परिवार 215 किलोमीटर और Waiblingen से आने वाले दोस्त और परिवार 220 किलोमीटर का सफर तय करके अपने आक़ा से मुलाकात के लिए पहुंचे थे। इन सभी ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनाने के सौभाग्य प्राप्त किया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने करूणा से शिक्षा पाने वाले छात्रों और छात्राओं को कलम प्रदान किया और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट प्रदान किया।

मुलाकातों का यह कार्यक्रम 35 मिनट की अवधि के लिए जारी रहा। बाद में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने निवास क्षेत्र में पधारे । 2 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने तशरीफ़ लाकर नमाज़े ज़ुहर तथा असर जमा करके पढ़ाई। नमाज़ अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ अपने निवास में पधारे। पिछले पहर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ विभिन्न कार्यालय के मामलों को प्रतिपादन करने में व्यस्त रहे।

परिवारों की मीटिंग

कार्यक्रम के अनुसार 6 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ अपने कार्यालय पधारे और परिवारों मीसटिंग शुरू हुई। आज शाम इस सत्र में 60 परिवारों के 229 लोगों को मुलाकात का सौभाग्य मिला। सभी ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया। हुज़ूर अनवर ने करूणा से शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों और छात्राओं को कलम प्रदान किए और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट प्रदान किए। आज शाम इस सत्र में मिलने वाली यह परिवारों जर्मनी के विभिन्न 31 जमाअत और शहरों से आई थीं। जिनमें से कुछ परिवारों और दोस्तों बड़े लंबे सफर तय करके पहुंचे थे। Euskirchen और Iserlohn से आने वाले 200 किमी, मयूनसटर 270 किमी, Bocholt से आनेवाले 300 किमी, Lorrach से आने वाली परिवारों 350 किमी, Waldshut से आने वाले 375 किलोमीटर और बर्लिन से आने वाले दोस्त और परिवार 550 कि.मी का लंबा सफर तय करके अपने प्यारे आक़ा से मुलाकात के लिए पहुंचे थे। इन लोगों ने जो कुछ क्षण अपने आक़ा के निकटता में गुज़ारे वे उनके सारे जीवन की पूंजी और उनके लिए और उनके बच्चों के लिए यादगार क्षण थे। प्रत्येक ने अपने प्यारे आक़ा के दुआओं से हिस्सा लिया। दर्शन की प्यास बुझी और यह कुछ मुबारक क्षणों उन्हें हमेशा के लिए सिंचित कर गए। मीटिंगों का यह कार्यक्रम आठ बजे तक जारी रहा। बाद में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने निवास के पर तशरीफ़ ले गए।

आमीन की तकरीब (समारोह)

नौ बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मस्जिद के हॉल में पधारे और कार्यक्रम के अनुसार आमीन की तकरीब (समारोह) का आयोजन हुआ। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने 29 बच्चों और बच्चियों से कुरआन की एक एक आयत सुनी और अंत में दुआ करवाई। निम्नलिखित ख़ुशनसीब बच्चों और बच्चियों ने आमीन समारोह में शामिल होने का सौभाग्य पाया।

प्रिय हमाद चीमा, यशब अहमद, शाज़िल अहमद ख़ान, नदीम रहीम अहमद, समीर सलमान अहमद माहिद मुबारक अहमद आलियान अहमद काहलों, याह्या मोहसिन रजा, ज़ैन अहमद काहलों, शरजील अहमद शाह, सरमद मुबश्शिर, राणा जाज़िब अहमद, मुहम्मद अब्दुल्लाह जावेद, ज़रियाब अहमद आफ़्ताब। प्रिया मर्यम बाजवा, फरीहा जावेद, हलवाद सहर अहमद सबीकह चीमा, राबिया अकबर, ईशा दाऊद, आयशा नवीद, रिदा बुशरा नवीद, माहिदा खालिद, फ़ाइज़ह ताहिरा, अतयतुस्सालम, माहिरा रज़ा, तंज़ील अहमद, बासमा कशफ़ रांझा, निदा रहमान

बाद में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने नमाज़ मग़रिब और इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों के अदा के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला अपने निवास क्षेत्र में पधारे । **(शेष.....)**

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

,सुन्ननी, देवबंदी, बरेलवी, वहाबी, तबलीग़ी, मुकल्लद,गैर मकलद,आदि मुसलमानों के फिर्के हैं। और उन्होंने एक दूसरे के खिलाफ कुफ्र के फतवे दिए हुए हैं फिर उन्हें जमाअत अहमदिया पर कुफ्र का फत्वा देते हुए अपने पर लगे कुफ्र के फत्वा पर ध्यान देना चाहिए।

इस्लामी भाइयो !! विचार करें हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुबारक ज़बान से निकला हुआ एक शब्द पूरा हो गया। इन 72 ने एक तरफ होकर 73 वें समुदाय को अलग कर दया।और साबित कर दिया कि वे 72 जिन के बारे में आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने (जहन्नमी होने की) भयावह पेशगोई फरमाई थी।

सवाल करने वाले मुसलमान भाइयों की सेवा में बड़े अदब से अर्ज़ है कि ऐसे समुदायों के मुसलमानों जैसे नामों और शक्लों पर न जाएं बल्कि उनके ग़ैर इस्लामी और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षाओं के सरासर खिलाफ फतवों और फैसलों को देखें जो इस्लाम और मुसलमानों होने को ही संदिग्ध बना देते हैं। हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया था अगर कोई मुसलमान को काफिर कहता है बावजूद इसके कि वह मुसलमान है तो اَلّا كَانَ هُوَ الْكَافِرُ वे खुद ही काफ़िर हो जाता है।

(सुनन अबी दाऊद अलबाब अली ज़यादतुल ईमान)

इन 72 फिर्कों में विभाजित मुसलमानों ने जमाअत अहमदिया मुस्लिमा को काफिर करार देकर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीस के वाक्यांश के अनुसार, अपने आप को ही काफिर करार दे लिया।

अब ज़रा इस्लामी तारीख़ का अध्ययन कर लें तो आप को यह नसीहत वाली हकीकत नज़र आएगी कि अपने आप को मुसलमान कहलाने वाले उलमा और लीड़रों ने अल्लाह के पाक बन्दों के ख़िलाफ कैसे कैसे घृणित इलज़ाम औप फत्वे लगाए हैं। और फिऱ उन्हें बेदर्दी से मौत के घाट उतारा दिया

हज़रत उसमान रज़ि हज़रत अली रज़ि पर फत्वा लगाने वाले भी अपने आप को मुसलमान कहते थे।

हज़रत इमाम हुसैन पर फत्वा लगाने वाले और उनके ख़िलाफ फतवा जारी करने वाले और फिर बहुत क्रूर तरीके से शहीद करने वाले भी अपने आप को मुसलमान कहते थे।

इन्हीं मुसलमान कहलाने वालों तथा अपने आप को बड़ा आिलम और फ़िक़्ही समझने वालों ने ही चार इमामों को भी प्रताड़ित किया। हज़रत इमामे आज़म अबु हनीफा को जाहिल, बिदअती, ज़नदीक काफ़िर तक के ख़िताब दिए। आख़र कैद ख़ाना में ज़हर देकर मार दिया। हज़रत अबु अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन इदरीस शाफई को अज़्र मिनल अब्लीस (यानी शैतान से ज्यादा ख़तरनाक) कहा। हज़रत इमाम मालिक को 25 साल तक जुम्अ- व जमाअत से रोकने वाले अपने जमाने के मौलवी और धार्मिक नेता थे और हज़रत इमाम हंबल को 28 महीने कैद में पैरों पर भारी ज़ंजीर डालने वाले भी मुसलमान भी थे, हज़रत इमाम बुख़ारी को देश से निकलने वाले भी मुसलमान थे। हज़रत कुतुबुल अकताब वायज़ीद को वुस्ताम शहर से निकाले गए। हज़रत शेख मोहिउद्दीन बन अरबी जो शेख अकबर कहते हैं न केवल काफिर बल्कि अकफर कहने वाले भी मुसलमान थे। उस ज़माना के उलमा ने कहा कि उनका कुफ्र यहूद व ईसाई के कुफ्र से बढ़ कर है ।

अल्लाह तआला की तरफ से आने वाले का इनकार करने वाले जहन्नम की तरफ हांक जाएंगे।

अत: कोई चुना हुआ व्यक्ति ऐसा नहीं गुज़रा कि जिस पर अपने ज़माने के मुसलमान और इस्लाम के ठेकेदार समझने वालों ने कुफ्र का फतवा न लगाया। फिर यह कैसे हो सकता था कि इस ज़माने में अल्लाह तआला ने जिसे मसीह और महदी बनाकर भेजा है उसके ख़िलाफ इस्लाम के ठेकेदार कुफर के फतवा न लगाते अल्लाह तआला ने इस्लाम से पहले मानव जाति के सुधार के लिए नबियों और रसूलों की भिजवाया था और इस्लाम के बाद सिद्धांत निर्धारित किया गया कि वही उम्मती नबी होगा। जिस के बारे में, हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़बर दी होगी। हज़रत मसीह मौऊद भी उम्मती रसूल और नबी हैं आप के आने के बारे में आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़बर दी थी। जिस पर भूतकाल में विभिन्न प्रकार के आरोप और बहाने बना कर नबियों का इंकार किया गया। इस ज़माने में भी विभिन्न प्रकार का बहाने बना कर आने वाले का इंकार किया जा रहा है। ऐसे इंकार करने वालों के बारे में अल्लाह तआला क़ुरआन मजीद में फरमाता है।

और वो लोग जिन्होंने कुफ्र किया गिरोह गिरोह जहन्नम की तरफ हांके जांऐगे। यहां तक कि वे उस के पास आ जाएंगे उस के दरवाज़े खोल दिए जाऐंगे और उन के दरोग़ा उन से कहेंगे क्या तुम्हारे पास तुम ही में से रसूल नहीं आए थे जो तुम पर तुम्हारे रब्ब की आयतें तिलावत करते थे और तुम्हें उस दिन की मुलाकात से डराया करते थे वे कहेंगे क्यों नहीं अवश्य अज़ाब का फरमान काफिरों पर पूरा हो गया है।

(सूरत-ज़ुमर 39/72)

इनकार करने वाले लीडरों के बारे में फरियाद करेंगे।

जो लोग अपने ज़माने के उलमा और नेताओं के कहने पर अल्लाह तआला की तरफ से भेजे हुए का इंकार करते हैं, वे क़यामत के दिन अल्लाह तआला से अपने लीडरों के बारे में फिरयाद करेंगे जिस दिन उन के चेहरे जहन्नम में ओंधे किए जाएंगे वो कहेंगे हे काश हम अल्लाह की इताअत करते और रसूल की इताअत करते।

और वे कहेंगे, "हे हमारे रब्ब, हम ने अपने सरदारों और बड़ों की इताअत की थी अत: उन्होंने हमें गुमराह किया।हे हमारे रब्ब उन्हें दुगना अज़ाब दे और उन पर बहुत बड़ी लानत कर। "

(सूरत अल-अहज़ैब 33/67)

दुआ है कि अल्लाह तआला हर मुसलमान को मसीह महदी अलैहिस्सलाम को स्वीकर करके इन की जमाअत में शामिल होने की तौफीक़ प्रदान करे। आमीन।

(शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

और मेरा उद्देश्य यह है कि मुहम्मद[स.] का धर्म दिन-प्रतिदिन पतन की अवस्था में है ख़ुदा उसका सहायक हो, तत्पश्चात् मैं क़ादियान चला आया। कुछ दिनों के पश्चात् डाक द्वारा उनका पत्र मुझे मिला जिसमें यह लिखा था कि -

"اینعاجزبرائےشہادعاکرد ہ بود القاشد۔ وَانْصُرنا علی القوم الکافرین۔ فقیرراکم اتفاق ے افتدکه بدیں جلدی القاشود ایں از اخلاص شماے بینم۔"

अत: अब्दुल हक़ ग़ज़नवी के अत्यन्त आग्रह के पश्चात् मैंने उसकी ओर लिखा कि मैं किसी मुसलमान कलिमा पढ़ने वाले से मुबाहला करना नहीं चाहता। उसने उत्तर दिखा कि जब हम ने तुम पर कुफ्र का फ़त्वा दे दिया तो तुम्होर निकट हम काफ़िर हो गए तो फिर मुबाहले में क्या आपत्ति। अत: उसके बहुत आग्रह के पश्चात् मैं मुबाहले के लिए अमृतसर में आया और चूंकि मुझे स्वर्गीय मौलवी अब्दुल्लाह साहिब से हार्दिक प्रेम था और मैं उनको अपने इस पद के लिए बतौर *इरहास* के समझता था जैसा कि यह्या ईसा के पहले प्रकट हुआ। इसलिए मेरे हृदय ने अब्दुल हक़ के लिए किसी बद्दुआ को प्रिय नहीं समझा अपितु मेरी दृष्टि में वह दयनीय था क्योंकि वह नहीं जानता था कि किसे बुरा कहता है। वह अपने विचार में इस्लाम के लिए एक स्वाभिमान प्रदर्शित करता था और नहीं जानता था कि इस्लाम के समर्थन में ख़ुदा का क्या इरादा है। बहरहाल मुबाहले में उसने जो चाहा कहा परन्तु मेरी दुआ का अभीष्ट मेरी ही आत्मा थी और मैं ख़ुदा के दरबार में यही विनती कर रहा था कि यदि मैं झूठा हूं तो झूठों के समान तबाह किया जाऊं और यदि मैं सच्चा हूं तो ख़ुदा मेरी सहायता करे। इस बात पर ग्यारह वर्ष गुज़र गए जब यह मुबाहला हुआ था, तत्पश्चात् ख़ुदा ने जिस प्रकार मेरी सहायता की मैं इस संक्षिप्त पुस्तक में उसका वर्णन नहीं कर सकता। यह बात किसी पर गुप्त नहीं कि जब मुबाहला किया गया तो मेरे साथ केवल कुछ लोग थे जो उंगलियों पर गिने जा सकते थे और अब तीन लाख से भी कुछ अधिक हैं जो मेरी बैअत कर चुके हैं। आर्थिक संकट इतने थे कि बीस रुपए मासिक भी नहीं आते थे और क़र्ज़ा लेना पड़ता था और अब मेरी जमाअत की समस्त शाखाओं से लगभग तीन हज़ार रुपए मासिक आय है तथा ख़ुदा ने इसके पश्चात् बड़े-बड़े शक्तिशाली निशान दिखाए। जिसने मुकाबला किया अन्तत: वह तबाह हुआ। जैसा कि उन निशानों के देखने से जो मात्र नमूने के तौर पर यहां लिखे गए हैं। स्पष्ट होगा कि ख़ुदा ने मेरी कैसी-कैसी सहायता की। ऐसे ही हमारे निशान ख़ुदा की सहायता से प्रकट हो चुके हैं जो उनमें से केवल बतौर नमूना यहां उल्लेख किए गए परन्तु किसी व्यक्ति में लज्जा और न्याय हो तो उसके लिए ये निशान मेरी सच्चाई के लिए पर्याप्त हैं।

(हक़ीक़तुल वह्यी, पृष्ठ 115 -118, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 22, पृष्ठ 223-226)

☆ ☆ ☆

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/2017-2019 Vol. 2 Thursday 16 November 2017 Issue No. 46

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 300/- Per Issue: Rs. 6/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

फ़ज़ाइले क़ुरआन मजीद

कलाम हज़रत मसीह मौऊद अ.

जमालो हुस्ने कुरआँ नूरे जाने हर मुसल्माँ है
कमर है चान्द औरों का हमारा चान्द कुरआँ है
नज़ीर उसकी नहीं जमती नज़र में फिक्र कर देखा
भला क्यों कर न हो यक्ता कलामे पाक रहमाँ है
बहारे-जावेदाँ पैदा है उसकी हर इबारत में
न वो खूबी चमन में है, न उस सा कोई बुस्ताँ है
कलामे-पाके-यज़दाँ का कोई सानी नहीं हरगिज़
अगर लूलूए अम्मा है वगरन लअले बदख्शाँ है
ख़ुदा के कौल से कौले बशर क्योंकर बराबर हो
वहाँ कुदरत यहाँ दरमान्दगी फर्के नुमायाँ है
मलायक जिसकी हज़रत में करें इक़रारे-ला-इल्मी
सुख्न में उसके हमताई, कहाँ मक्दूरे इन्साँ है
बना सकता नहीं इक पाँव कीड़े का बशर हरगिज़
तो फिर क्यों कर बनाना नूरे हक का उस पे आसाँ है
हमें कुछ कीं नहीं भाईयो ! नसीहत है ग़रीबाना
कोई जो पाक दिल होवे दिलो जाँ उस पे कुरबाँ

(दुर्रेसमीन)

इस्लाम और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर महापुरूषों के विचार

इन्सानी भाईचारा और इस्लाम पर महात्मा गांधी जी का ब्यानः

''कहा जाता है कि यूरोप वाले दक्षिणी अफ्रीका में इस्लाम के प्रसार से भयभीत हैं, उस इस्लाम से जिसने स्पेन को सभ्य बनाया, उस इस्लाम से जिसने मराकश तक रोशनी पहुँचाई और संसार को भाईचारे की इंजील पढाई। दक्षिणी अफ्रीका के यूरोपियन इस्लाम के फैलाव से बस इसलिए भयभीत हैं कि उनके अनुयायी गोरों के साथ कहीं समानता की माँग न कर बैठें। अगर ऐसा है तो उनका डरना ठीक ही है। यदि भाईचारा एक पाप है, यदि काली नस्लों की गोरों से बराबरी ही वह चीज है, जिससे वे डर रहे हैं, तो फिर (इस्लाम के प्रसार से) उनके डरने का कारण भी समझ में आ जाता है।''

(पृष्ठ 13, प्रो. के. एस. रामाकृष्णा राव की मधुर संदेश संगम, दिल्ली से छपी पुस्तक ''इस्लाम के पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल) में)

खुदा के समक्ष रंक और राजा सब एक समान

इस्लाम के इस पहलू पर विचार व्यकत करते हुए सरोजनी नायडू कहती हैं-

''यह पहला धर्म था जिसने जम्हूरियत (लोकतंत्र) की शिक्षा दी और उसे एक व्यावहारिक रूप दिया। क्योंकि जब मीनारों से अज़ादी दी जाती है और इबादत करने वाले मस्जिदों में जमा होते हैं तो इस्लाम की जम्हूरियत (जनतंत्र) एक दिन में पाँच बार साकार होती है, जब रंक और राजा एक-दूसरे से कंधे से कंधा मिला कर खडे होते हैं और पुकारते हैं, 'अल्लाहु अकबर' यानी अल्लाह ही बडा है। मैं इस्लाम की इस अविभाज्य एकता को देख कर बहुत प्रभावित हुई हूँ, जो लोगों को सहज रूप में एक-दूसरे का भाई बना देती है। जब आप एक मिस्री, एक अलजीरियाई, एक हिन्दुस्तानी और एक तुर्क (मुसलमान) से लंदन में मिलते हैं तो आप महसूस करेंगे कि उनकी निगाह में इस चीज़ का कोई महत्व नहीं है कि एक का संबंध मिस्र से है और एक का वतन हिन्दूस्तान आदि है।'' पृष्ठ 12

जार्ज बर्नाड शा का भी कहना है:

''अगर अगले सौ सालों में इंग्लैंड ही नहीं, बल्कि पूरे यूरोप पर किसी धर्म के शासन करने की संभावना है तो वह इस्लाम है।''

'बर्नार्ड शा' अपनी किताब 'इस्लाम सौ साल के बाद' में कहता है: पूरी दुनिया शीघ्र ही इस्लाम को स्वीकार कर लेगी। अगर वह उसे उसके स्पष्ट नाम के साथ स्वीकार न करे तो उसे (किसी दूसरे) नाम से अवश्य स्वीकार करेगी। एक दिन ऐसा आएगा कि पश्चिम के लोग इस्लाम धर्म को गले से लगाएंगे। पश्चिम पर कई सदियाँ गुज़र चुकी हैं और वह इस्लामके संबंध में झूठ से भरी हुई किताबें पढ़ता चला आ रहा है। मैं ने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में एक किताब लिखी थी किन्तु अंग्रेज कीरीतियों और परम्पराओं से हट कर होने के कारण वह ज़ब्त कर ली गई।

प्रोफेसर 'कीथ मोरे' अपनी किताब (The developing human)में कहते हैं: मुझे यह बात स्वीकारने में कोई कठिनाई नहीं होती कि क़ुरआन अल्लाह का कलाम (कथन) है,क्योंकि क़ुरआन में जनीन (गर्भस्थ) के जो विश्वरण दिए गए हैं उनका सातवीं शताब्दी की वैज्ञानिक जानकारी पर आधारित होना असम्भव है। एकमात्र उचित परिणाम (निष्कर्ष) यह है कि यह विवरण मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अल्लाह की ओर से व (ईश्वाणी) किये गये थे।

☆ ☆ ☆

तब्लीग़ का विस्तार करो

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ियल्लाहो अन्हो तब्लीग़ का विस्तार करने के संबंध में जमाअत के दोस्तों को समझाते हुए फरमाते हैं:

"तुम भी अगर ख़ुदा तआला से संबंध पैदा करोगे और तहज्जुद और ज़िक्र पर ज़ोर दोगे तो तुम्हारे आसपास के रहने वाले तुम से दुआएं करवाएँगे, तुम्हारी बुजुर्गी का प्रभाव उनके दिलों पर होगा। अब तुम में से हर व्यक्ति यह भूल जाए कि वह ज़ैद या बकर है। बल्कि वह यह सुनिश्चित कर ले कि वह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ख़लीफा और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस देश में प्रतिनिधि हैं। इसलिए अपने स्थान को समझो और मुझे ख़ुश खबरियां भिजवाओ कि ख़ुदा तआला ने तुम्हारी ज़ुबानों में प्रभाव दिया है और बहुत अधिक लोग अहमदियत में प्रवेश कर रहे हैं और तुम्हारे ईमानों में इतनी शक्ति दी है कि वित्तीय स्थिति दिन प्रतिदिन सही होती जा रही है और तब्लीग़ का सिलसिला फैल रहा है।"

(सवानेह फज़ले उमर, भाग 4, पृष्ठ 404 से 405)

☆ ☆ ☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْأَقَاوِيلِ لَأَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِينِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِينَ

(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वह कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बद्ध कर देता तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह उसकी जान की शिरा काट देते।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे अधिकतर उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित की गई है। किताब प्राप्त करने के इच्छुक दोस्त पोस्ट कार्ड/ मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**
Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186
Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab
For On-line Visit :www.alislam.org/urdu/library/57.html

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad